ज्ञानामृत

फरवरी, 1983
वर्ष 18 ❋ अंक 8

मूल्य 1.25

बम्बई (भान्डुप) में हुए विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन बम्बई के महापौर डा० प्रभाकर भाई तथा दीदी मनमोहिनी जी दीप जलाकर करते हुए।

चन्डीगढ़ में आयोजित विश्व शान्ति सम्मेलन में डाक्टरों के कार्यक्रम में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० प्रेम, ब्र० कु० चन्द्रमणि, भ्राता के. बैनर्जी, मुख्य आयुक्त चन्डीगढ़, ब्र० कु० जगदीश जी, डा० गुलाटी विराजमान हैं।

भोपाल में राजयोग संग्रहालय देखने के पश्चात् ब्र० कु० अवधेश, भ्राता मुन्नी प्रसाद शुक्ला राजस्व मंत्री (म० प्र०) को श्री कृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं।

बिलासपुर (म० प्र०) में आयोजित त्रिदिवसीय विश्व शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन में बोलते हुए ब्र० कु० ओमप्रकाश जी।

नेरोबी में कीन्या के सहायक स्वास्थ मंत्री को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र० कु० वेदान्ती तथा अन्य चित्र में दिखाई दे रहे हैं ।

फरीदाबाद में प्रताप स्टील फैक्ट्री के मालिक भ्राता एम. डी. महेश्वरी को ब्र० कु० शुक्ला साहित्य भेंट करती हुई । ब्र० कु० ऊषा, सुदेश, निर्मला तथा अन्य साथ में हैं ।

अहमदाबाद में आयोजित नवरंगपुरा के कर्मयोग फलैट्स के राजयोग शिविर में राजयोग का अभ्यास करते हुए (बाएं से) जनरल पोस्टमास्टर गुजरात, भ्राता राघवन, म्युनिसिपल कमिश्नर भ्राता भट्ट जी तथा अन्य ।

भान्डुप (बम्बई) में हुए विश्व शान्ति मेले के उद्घाटन पूर्व ध्वजारोहण करती हुई ब्र० कु० बृज इन्द्रा जी एवं दीदी मनमोहिनी जी ।

Regd. No. D.(E) 70

पोरबन्दर में वकीलों के स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित हैं (दाएं से) ब्र० कु० दमयंती, ब्र० कु० मार्गरिट, अतिरिक्त सत्र न्यायधीश दोशी जी, ब्र० कु० आर. एल. गुप्ता अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (देहली) ब्र० कु० जॉय: ब्र० कु० प्रभु लाल जी।

आबू पर्वत पर "ओमशान्ति भवन" के आंगन में वृक्षारोपण करती हुई दीदी मनमोहिनी जी तथा दादी प्रकाशमणि जी।

जयपुर में ब्र० कु० सुषमा अखिल विश्व जैन मिशन के द्वारा आयोजित अहिंसा दिवस समारोह में प्रवचन करती हुई।

शोलापुर में आध्यात्मिक संग्राहालय में चित्रों की व्याख्या देती हुई ब्र० कु० सोमप्रभा। आयुक्त भ्राता रमानाथ झा तथा अन्य बड़े ध्यानपूर्वक सुनते हुए।

बंगलोर में मुख्य न्यायाधीश भ्राता भीमया को आबू पर्वत पर होने वाले विश्वशान्ति सम्मेलन का निमन्त्रण देने के पश्चात ब्र० कु० सरला, सरोजा, राधा खड़ी हैं।

वर्ष १८ अंक ८ फरवरी १९८३ मूल्य १.२५

अमृत–सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	हीरे-तुल्य शिवरात्री पर सदा-शुभ बधाई	१		न होने से ही विश्व में अशान्ति है	१३
२.	बात विश्व शान्ति की और शान्ति के लिए निमन्त्रण शिव बाबा का (सम्पादकीय)	२	९.	सतयुग और बीज की शक्ति	१५
३.	शिवरात्री का रहस्य	५	१०.	शिव बाबा (कविता)	१८
४.	फूलों की माला बनाई (गीत)	७	११.	आत्मा, परमात्मा तथा मेरा अनुभव	१९
५.	शिवरात्री महोत्सव	८	१२.	जब मैं कृष्ण बना (नाटक)	२१
६.	'विजयी रत्न'	९	१३.	'ईश्वरीय खुशी—जीवन का शृंगार'	२५
७.	ओ गुलशन के माली (कविता)	१२	१४.	प्रश्नों के उत्तर	२८
८.	पारस्परिक सम्बन्ध का वास्तविक ज्ञान		१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९
			१६.	सेवा समाचार (चित्रों में)	३०

हीरे-तुल्य शिवरात्री पर सदा-शुभ बधाई

यदि भारतवासी अथवा अन्य देशों के लोग पतित-पावन निराकार परमपिता परमात्मा शिव की वास्तविक जीवन-कहानी से परिचित होते तो वे उनके दिव्य जन्म के दिन (शिवरात्री) को लगातार कई दिनों तक बहुत धूमधाम से मनाते क्योंकि यह तो निराकार परमप्रिय परमपिता परमात्मा के कल्याणकारी दिव्य जन्म का दिन है जिन्होंने कि 5000 वर्ष (कल्प) पहले अत्यन्त पतित, दुखी, अशान्त कंगाल, मुहताज, भ्रष्टाचारी, आसुरी और कौड़ी-तुल्य कलियुगी भारत को पूर्ण पावन, सुखी, शान्त, डबल ताजधारी, श्रेष्ठाचारी, दैवी और हीरे-तुल्य सतयुगी भारत बनाया था और विश्व-भर की सभी मनुष्यात्माओं को मुक्ति और जीवन-मुक्ति का ईश्वरीय वर्सा दिया था । गीता में उन्हीं के स्पष्ट महावाक्य हैं कि मेरे दिव्य जन्म और कर्म के रहस्य को जो यथार्थ रीति जान लेता है वह जीवन-मुक्ति प्राप्त कर लेता है । अतः उनकी कल्याणकारी, पुण्यकारी और पदमों-तुल्य जीवन कहानी को जानना हर एक नर-नारी के लिए अत्यन्त आवश्यक है ।

कितने सौभाग्य की बात है कि अब वह परमप्रिय परमपिता निराकार परमात्मा शिव पुनः प्रजापिता ब्रह्मा के तन द्वारा 46 वर्षों से सच्चा गीता-ज्ञान और राजयोग फिर से सिखा रहे हैं और भारत में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण अथवा श्री सीता-श्री राम का पावन एवम् सुख-शान्ति सम्पन्न श्रेष्ठाचारी राज्य स्थापन कर रहे हैं ।

परमपिता परमात्मा शिव के इस हीरे-तुल्य दिव्य जन्म पर सभी को सदा शुभ बधाई है क्योंकि अब ही उन्हें यथार्थ रीति जानकर उन द्वारा 21 जन्मों (2500 वर्षों) के लिए स्वर्ग की सदा सुखी, सदा शान्त, सदा स्वस्थ दैवी स्वराज्य-पद प्राप्त किया जा सकता है ।

बात विश्व शान्ति की और शान्ति के लिए निमन्त्रण शिव बाबा का

आज विज्ञान और तकनीकी ने संसार में नये-नये, उपयोगी, सुविधाजनक तथा रंग-बिरंगे साज़-सामान बना कर संसार में पदार्थों की वृद्धि तो कर दी है परन्तु इतना सब-कुछ होने के बाद भी मनुष्य को पल-भर भी सच्ची शान्ति का अनुभव नहीं होता। यों जिन लोगों के पास कारें हैं, कारखाने हैं और धन का बाहुल्य तथा सुख के सब साधन भी प्राप्त हैं, वे लोग देखने को तो सुखी दिखाई देते हैं, परन्तु उनके मन को भी अपनी प्रकार की समस्याएं घेरे हुए हैं और उनकी बुद्धि भी अपनी प्रकार की उलझनों में जकड़ी हुई है। दिन-भर में लाखों-करोड़ों रुपये के कारोबार में उन्हें तुरन्त निर्णय लेने होते हैं और उनमें बहुत लाभ होने के अवसर भी सामने आते हैं और भारी हानि होने के अवसर भी। इसलिये उन्हें सब प्रकार के उतार-चढ़ाव से गुजरना पड़ता है। कभी मिल के मजदूर हड़ताल कर देते हैं तो कभी सरकार की ओर से कोई नया कानून बन जाता है जिससे कोई रुकावट रास्ते में आ जाती है। अतः शान्ति उन्हें भी प्राप्त नहीं है। ध्यान से देखने से मालूम होगा कि आज छोटे-बड़े व्यक्ति के मन को चिन्ता कचोट रही है। कोई बुढ़ापे से परेशान है कोई रोग से पीड़ित, कोई पड़ौसी से तंग है कोई गरीबी से फटेहाल, तो अन्य कोई मुकदमाबाजी की दलदल में फंसा हुआ है। कोई एक भी व्यक्ति ऐसा दिखाई नहीं देता, जिसके महीने के 30 दिन और हर दिन के 24 घण्टे लगातार एक वर्ष तक निरन्तर एवं पूर्ण शान्ति से गुजर जाते हों। किसी भी व्यक्ति के मुखमण्डल पर सच्ची शान्ति, खुशी और सन्तुष्टता की रेखाएं नहीं दिखाई देतीं। अतः प्रश्न उठता है कि मनुष्य, जिसको सर्व प्राणियों में से श्रेष्ठ माना जाता है, का ऐसा हाल क्यों हुआ है? जबकि, सभी ईश्वरवादी लोग परमात्मा को 'शान्ति को सागर' तथा परम-पिता मानते हैं और उसके कर्त्तव्यों की महिमा करते हुए उसे 'दुःख-हर्ता' और 'सुख कर्ता' मानते हैं, तब ऐसे कृपालु परमपिता की सन्तति होते हुए भी मनुष्यात्मा शान्ति रूपी पैतृक ईश्वरीय सम्पत्ति से वंचित क्यों है?

अशान्ति के अनेक कारण

आज विश्व में जो अशान्ति है, लोग उसके अनेकानेक कारण गिनाते हैं। कोई कहता है कि आज विश्व दो गुटों में बंटा है जिसमें एक ओर पूंजीवादी और साम्राज्यवादी हैं और दूसरी ओर साम्यवादी। वे दोनों गुट अपना-अपना प्रभुत्व बनाने की होड़ में हैं। इस होड़ में वे आपने-अपने सैनिक बल को भी उत्तरोत्तर उग्रतर से उग्रतम बढ़ाते जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप विश्व के अस्तित्व के लिए भी संकट पैदा हो गया है। विशेषतया पाश्चात्य देशों में तो लोग इस आर्थिक और राजनीतिक बटवारे तथा इससे जुटे हुए शस्त्रीकरण की दौड़ के भयावह परिणामों से त्रस्त हैं।

अन्य कुछ लोग काले और गोरे के रंग-भेद, अर्थात् जाति-भेद को या भाषा-भेद, धर्म-भेद इत्यादि को अशान्ति के मुख्य कारण मानते हैं। इन कारणों को दूर करने के लिए ही वे अनेक प्रकार के उपाय सोचते हैं। कभी निःशस्त्रीकरण की समस्या को लेकर किन्हीं देशों के प्रधानों के बीच शिखर सम्मेलन (Summit Conference) होता है तो कहीं धार्मिक एकता लाने के उद्देश्य से सर्व धर्म सम्मेलन। कभी जाति-भेद को समाप्त करने के लक्ष्य से संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रस्ताव रखे जाते हैं तो कहीं कुछ लोग मिलकर इन झगड़ों का शिकार बने लोगों की राहत के लिए कुछ उपाय करने को सोचते हैं। परन्तु ये अनेकानेक उपाय होने पर भी शान्ति कहीं निकट दिखाई नहीं देती। इससे ही स्पष्ट है कि अशान्ति का मूल करण कुछ और है और

उसका निवारण न होने के कारण अशान्ति विश्व में दिनोंदिन बढ़ती ही आई है।

नैतिक नियमों के पालन के बिना अशान्ति असम्भव

गहराई से विचार करने पर मालूम होगा कि अशान्ति का मूल कारण मनुष्य के अपने व्यावहारिक, व्यावसायिक, पारिवारिक, सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में किन्हीं नैतिक नियमों का अभाव अथवा किसी-न-किसी मनोविकार की विद्यमानता है। उदाहरण के तौर पर जब कोई मनुष्य अन्य किसी व्यक्ति से सन्मानपूर्वक तथा भ्रातृत्व और स्नेह से युक्त व्यवहार न करके क्रोध व घृणा रूपी विकार के वशीभूत होकर व्यवहार करता है तब उसके अपने मन में भी अशान्ति पैदा होती है और वह दूसरों को भी अशान्त करता है। इसी प्रकार, जब कोई व्यक्ति ईमानदारी नामक नैतिक मूल्य की अवहेलना करके लोभ और अति-संग्रह प्रवृत्ति रूपी मनोविकार का गुलाम बनता है तब भी वह अपने कर्म के परिणाम से भयभीत और दूसरे का शोषण करने के अभिशाप से अशान्त रहता है। इस प्रकार यह स्पष्ट किया जा सकता है कि चाहे मनुष्य का वैयक्तिक जीवन हो और चाहे किन्हीं देशों के बीच सम्बन्धों की बात हो, हर स्थिति में अशान्ति का मूल करण तो यह मनोविकार अथवा अपवित्रता अथवा नैतिक नियमों का अभाव ही है।

एकज भूल

अन्यश्च, यद्यपि यह बात जानी और मानी हुई है कि इन मनोविकारों का कारण मनुष्य का देहाभिमान है तथापि मनुष्य इस सत्यता को ओर यथा-आवश्यक ध्यान नहीं देता और इस मूल कारण के निवारण का उपाय भी नहीं करता। यह आश्चर्य की बात है कि आज के जमाने में जब मनुष्य का अपना हृदय, गुर्दा, कान या उसकी आंख इत्यादि हटा कर उसके स्थान पर किसी दूसरे के ये अंग आरोपित (Transplant) कर दिये जाते हैं और उसमें रक्त की भी अदला-बदली की जाती है, तब भी मनुष्य स्वयं को देह से भिन्न एक चेतन सत्ता मानने की बजाय शरीर मानने की भूल करता है। यद्यपि वह जानता है कि अंगों-प्रत्यंगों के बदल दिये जाने के बावजूद भी स्वचेतन सत्ता पहले की तरह ही बनी रहती है, तो भी वह शरीर रूपी इन्द्रिय-संग्रह को साधन रूप मानने की बजाय स्वयं को ही शरीर मानने की महान् भूल करता है। इस भूल के परिणामस्वरूप ही उसके कर्मों के गुणों में हो आमूल परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप ही उसका मन अशान्त और जीवन दुखी हो जाता है। इसके विपरीत यदि मनुष्य के मन में यह स्मृति बनी रहे कि वह स्वयं शरीर से भिन्न एक ज्योतिर्मय अनादि और अविनाशी सत्ता है जो कि मस्तिष्क में विराजमान होकर, मस्तिष्क रूपी स्विच-बोर्ड के द्वारा शरीर रूप साधन-संग्रह का कार्य करता है तो वह मनोविकारों से निवृत्ति और स्थायी शान्ति की प्राप्ति का भागी बन सकता है।

शान्ति के लिए जीवन-दर्शन

परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के मानवीय माध्यम से उपरोक्त विवेक-सार हम मनुष्यात्माओं को दिया है परन्तु उसके साथ-साथ निम्नलिखित अनमोल ज्ञान-रत्न भी प्रदान किये हैं जो कि ऐसे दर्शन के समान हैं जिनके पढ़ने से मनुष्य के जीवन में सदा शान्ति बनी रहे।

1. परमपिता शिव ने कहा है कि यह संसार एक नाटक-मंच है। मनुष्यात्मा शरीर रूपी वस्त्र लेकर अपना पार्ट अदा करती है और दूसरों का भी देखती है। जैसे किसी नाटक में कोई राजा अथवा रानी बनकर या दास अथवा दासी बन कर किसी महल में अपना पार्ट अदा करते हैं, परन्तु फिर भी वे मंच से दूर अपने घर और इस पार्ट से अलग अपने परिचय को भूल नहीं जाते, वैसे ही मनुष्य को भी चाहिए कि इस सृष्टि-मंच पर पार्ट करते हुए भी शरीर से अलग अपने निज स्वरूप को, निज धाम को और अपने वास्तविक परिचय को भूल न जायें, और वह दूसरों के पार्ट को भी साक्षी की न्यायीं देखें तथा उससे मनोरंजन का अनुभव करें, परेशान न हों।

2. शिव बाबा ने हमें समझाया है कि यह संसार एक कर्मक्षेत्र है। यहां जैसा कोई कर्म करता है,

वैसा ही वह फल भोगता है। अतः जब-कभी भी मनुष्य के सामने कोई दुखप्रद परिस्थिति आती है, तब मनुष्य को सोचना चाहिए कि वह सब उसके वर्तमान जीवन या पूर्व जीवन में किए किन्हीं कर्मों का फल है, क्योंकि कारण के बिना तो कभी कुछ होता नहीं। अतः इस कारण को जानकर, अब योग बल या गुण बल द्वारा उसके निवारण का यत्न करना चाहिए और साक्षी तथा शान्त रह कर उस घड़ी को पार करना चाहिए।

3. परमपिता शिव परमात्मा ने बताया है कि इस संसार को एक सराय अथवा मुसाफिरखाना मानकर, यहाँ की वस्तुओं का उपयोग करते हुए भी आसक्त नहीं होना चाहिए बल्कि उपराम रह कर अथवा न्यासी (Trustee) की न्यायीं जीवन व्यतीत करना चाहिए और अब आणविक शस्त्रों द्वारा महाविनाश के कगार पर खड़े विश्व से मोह-ममता त्याग कर अपने घर—परमधाम वापस चलने की तैयारी करनी चाहिए। इस तैयारी के बारे में शिव बाबा के ये शांतिदायक महावाक्य हैं—

शिव बाबा के शान्तिदायक महावाक्य

प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से शिव बाबा कहते हैं—'मेरे लाडले वत्सो, मेरे पास सुख और शान्ति का जो अतुल ख़जाना है, वह आप बच्चों के लिए ही तो है। पिता की सम्पत्ति बच्चों ही के लिए तो होती है। अतः स्थायी सुख और शान्ति का वह खजाना आपको देने के लिए अब मैं आया हूं।'

'वत्सो, आप मेरे 'मुकुटमणि' हो; आपसे मेरा अगाध स्नेह है। उठो तो मैं आपको शान्ति के सिंहासन पर ले चलूँ। परंतु, वत्सो, उसके लिए मुझ परमपिता की एक सम्मति अवश्य मानो। इस जन्म के शेष समय में, जबकि महाविनाश सामने है, पवित्र बनो और राजयोगी बनो? वत्सो, मैं आप से आपकी कोई उपयोगी या मूल्यवान चीज नहीं मांगता। बल्कि जिन मनोविकारों रूपी कचड़े ने आपको दुःखी किया है, उन्हें ही छोड़ने के लिए कहता हूं। क्या इस एक जन्म के थोड़े-से समय के लिए भी मेरी यह बात नहीं मानोगे? वत्सो, आप मेरी खातर, मेरे लिए ही सही, इस संगम युग की रही घड़ियों के लिए पवित्र बनो क्योंकि मुझे आप ही के लिए सतयुगी सुख-शान्तिमय स्वराज्य स्थापन करना है।'

परमपिता शिव पुनः कहते हैं—'वत्सो, यह तो मेरा आप से वचन ही है कि जब संसार में धर्म की अति ग्लानि होगी और अशान्ति फैलेगी तब मैं आकर पुनः सुख और शान्ति का स्वराज्य स्थापन करूंगा और उसके लिए राज योग सिखाऊंगा तथा दैवी सम्पदा की प्राप्ति के लिए आत्माओं का आह्वान करूंगा। अतः अब जबकि मैं अपना वचन पूरा करने के लिए आया हूं तब तो आप स्वयं को ज्योतिर्बिंदु, अनादि, अविनाशी आत्मा मानते हुए, स्वरूपस्थ होकर शान्ति रूपी स्वधर्म में टिको ताकि विश्व में शान्ति हो।'

विश्व-कल्याणकारी परमपिता का यह शुभ निमंत्रण और उनकी यह शुभ मंत्रणा 5000 वर्षों के सृष्टि-चक्र में केवल एक ही बार मिलती है। यही मन की शान्ति और विश्व शान्ति दिलाने वाली है क्योंकि परमपिता ही एक मात्र विश्व शान्ति के स्थापक हैं।

□

शिवरात्री का रहस्य

(ब्र० कु० प्रेम, देहरादून)

यह रहस्य भली भान्ति जानने की आवश्यकता है कि शिव कौन हैं, शिवरात्रि क्यों मनाई जाती है और आत्माओं की श्रेणी में शिव का कौन-सा उच्च स्थान है? लौकिक दृष्टि से तो मनुष्य जानते हैं कि इस संसार में कौन प्रसिद्ध मनुष्य क्या है (Who is who in this world ?) परन्तु इस सृष्टि के आदि से लेकर अन्त तक के इतिहास में शिव का क्या स्थान है, यह जाने बिना मुक्ति और जीवन-मुक्ति जैसे उच्च वरदान भला कैसे प्राप्त होंगे ? उदाहरण के रूप में आप देखिये कि कुछ लोग तो स्वयं को ही शिव मानते हैं (वे शिवोऽहं के सिद्धान्त के अनुयायी हैं।) परन्तु प्रश्न उठता है कि यदि आत्मा स्वयं ही शिव है तो फिर शिवरात्रि का त्यौहार किसके पुण्य जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है? 'शिव' तो कल्याण करने वाले परमात्मा का ही गुणवाचक नाम है। उनकी तो भारत में बहुत उपासना होती है। भक्त लोग 'ॐ नमो शिवाय' का जाप करते हैं। स्पष्ट है कि यह भक्ति, उपासना, महिमा स्वयं से किसी उच्च हस्ती (सत्ता) की होती है। अतः अपने आप को शिव मानना तो अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना है। यह तो छोटे मुंह बड़ी बात करना है। विश्व का कल्याण करने वाले त्रिभुवनेश्वर, स्वयंभू शिव कहां और माया द्वारा पराजित, अकल्याण-युक्त हम जन्म-मरण के चक्कर में आने वाली जीवात्माएं कहां ! शिव तो एक हैं, वह तो परमपिता हैं जो कि मनुष्यात्माओं को पतन के गड्ढे से निकाल कर उनका कल्याण करते हैं !

हमारे इस कथन से कोई यह न समझ बैठे कि शायद हम महादेव शंकरजी को ही शिव मानते हैं, क्योंकि प्रायः लोग शिव और शंकर को पर्यायवाची समझते हैं। वास्तव में शिव और शंकर एक ही के दो नाम नहीं हैं। आप देखते हैं कि मन्दिरों में एक तो

सूक्ष्माकारी देवता शंकर निराकार परमात्मा शिव

अंगुष्ठ-जैसी, शरीर के आकार से रहित मूर्ति रखी रहती है जिसे **शिवलिंग** कहते हैं और दूसरी शारीरिक रूप वाली महादेव शंकर की होती है। कभी आप ने सोचा कि ये दोनों अलग-अलग मूर्त्तियाँ क्यों हैं ? इसका यही कारण है कि शिवलिंग तो निराकार (शरीर-रहित) ज्योतिस्वरूप, ब्रह्मलोक के निवासी ज्योतिर्लिंगम् परमात्मा शिव की प्रतिमा है और दूसरी एक सूक्ष्म शरीर वाले, शंकरपुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है। 'शिव', ब्रह्मा, विष्णु और शंकर तीनों देवों के रचियता अर्थात् **'त्रिमूर्त्ति'** अथवा **'देवों के देव'** हैं। 'शिव' ही को 'मुक्तेश्वर' और 'पापकटेश्वर' भी कहा जाता है।

अतः अब आप समझ सकते हैं कि शिवरात्रि सर्वमहान् आत्मा के दिव्य जन्म का उत्सव है। मनुष्यों का जन्म-दिन तो परमात्मा शिव के जन्म-दिन की भेंट में ऐसे है जैसे हीरे की भेंट में कौड़ी, क्योंकि मनुष्य पाप काटने वाले (पापकटेश्वर), मुक्ति देने वाले (मुक्तेश्वर), तीनों लोकों के मालिक (त्रिभुवनेश्वर), रामेश्वर और गोपेश्वर अर्थात राम और श्रीकृष्ण के भी पूज्य नहीं हैं। वह 'देव देव' अर्थात् त्रिमूर्ति नहीं हैं। परन्तु अफ़सोस है कि इतने उच्च एवं पूज्य परमपिता के जीवन

वृत्तान्त को आज विदेशी तो क्या, भारत के लोग भी नहीं जानते। यही कारण है कि आज भारत कौड़ी-तुल्य अथवा कंगाल बन गया है। भारत की ऐसी दशा क्यों हुई है ? इसलिये ही कि यहाँ के वासियों के कर्म, भण्डारे भरपूर करने वाले परमपिता शिव की आज्ञाओं के विपरीत हैं अर्थात् वे परमात्मा से विपरीत-बुद्धि हैं।

"शिव ने क्या किया ?"

प्रश्न उठ सकता है कि परमात्मा शिव को क्यों याद करें ? उन्होंने ऐसा क्या महान् कार्य किया है कि आज तक उनकी महिमा, उन का गायन और पूजन होता है और उनका जन्मोत्सव मनाया जाता है ? हम बता चुके हैं कि मनुष्यात्माओं का कल्याण करने के कारण परमात्मा के 'शिव' नाम का गायन हुआ। आप पूछेंगे कि क्या कल्याण किया ? आज मनुष्य समझते हैं कि किसी को अन्न, धन, वस्त्र इत्यादि देना अथवा थोड़े समय के लिये किसी को आय का साधन इत्यादि प्राप्त करा देना ही किसी का कल्याण करना है। भारत सरकार ने तथा सामान्य जनता ने इस प्रकार के कई केन्द्र 'कल्याण केन्द्रों' के नाम से खोले हुए हैं। परन्तु आप सोचिये कि जब तक मनुष्यात्माओं में जागृति नहीं आयेगी, जब तक उनके कर्मों में पवित्रता नहीं आयेगी तब तक उनके दुःखों का कोई न कोई कारण तो बना ही रहेगा। अतः परमपिता परमात्मा, जो कि कर्मों की गुह्य गति को जानने वाले हैं, मनुष्य का कल्याण इस प्रकार करते हैं कि वह उनके कर्मों में श्रेष्ठता लाते हैं।

दो चीज़ों की आवश्यकता है

कर्मों को श्रेष्ठ बनाने के लिये दो चीज़ों की आवश्यकता है—एक तो **ज्ञान** की और दूसरे **योग** की। कौन-से कर्म करने चाहियें, कौन-से नहीं करने चाहियें, आत्मा क्या है, उसे अपने स्वरूप में कैसे स्थित होना चाहिये इत्यादि-इत्यादि विषयों को ठीक-ठीक जानना ही ज्ञान कहलाता है। केवल ज्ञान से ही मनुष्य पवित्र नहीं बन सकता क्योंकि जब तक मनुष्य सर्वशक्तिमान् परमपिता परमात्मा शिव से शक्ति न ले तब तक वह अपने पूर्वकालीन संस्कारों को बदल नहीं सकता, विकर्मों को दग्ध नहीं कर सकता और पूर्ण कल्याण अथवा आनन्द को प्राप्त नहीं हो सकता। परमपिता परमात्मा से आध्यात्मिक शक्ति, संस्कारों की पवित्रता, आनन्द इत्यादि की प्राप्ति के लिए उनसे सम्बन्ध स्थापित करना ही योग है। परमपिता परमात्मा शिव ने स्वयं ही वास्तविक योग सिखा कर मनुष्य को "माया जीते जगत जीत" बनाया। योग द्वारा ही उन्होंने मनुष्यों के पाप-बन्धन काटे और योग द्वारा ही पावन किया। इस कारण ही वह 'पापकटेश्वर' अथवा 'पतित पावन' कहलाते हैं। ज्ञान-रूपी सोमरस पिलाने के कारण ही उनको सोमनाथ भी कहते हैं।

आपके मन में प्रश्न उठेगा कि ज्ञान और योग सिखाकर परमपिता परमात्मा शिव मनुष्यात्माओं को क्या पद प्राप्त कराते हैं ? इसके बारे में उक्ति प्रसिद्ध है कि वह "नर से श्री नारायण और नारी से श्री लक्ष्मी पद" अथवा "मनुष्य से देवता पद" के योग्य बनाते हैं। श्री नारायण को ही बाल्य-काल में श्रीकृष्ण कहते हैं।

अतः मालूम रहे कि गीता-ज्ञान श्रीकृष्ण ने नहीं दिया था बल्कि त्रिलोकीनाथ, ज्ञान के सागर, निराकार, विश्वपिता परमात्मा शिव ने दिया था। श्रीकृष्ण ने भी परमात्मा शिव ही के ज्ञान से श्री नारायण पद प्राप्त किया। इसलिये वास्तव में 'शिव' ही गीता-ज्ञान दाता हैं। इस कारण **शिवरात्रि ही गीता जयन्ती है।** परन्तु आज यह अनमोल रहस्य जनता को मालूम नहीं है। अगर देश-विदेश में यह मुख्य बात सभी को मालूम हो जाय कि गीता का ज्ञान सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता, देवों के देव परमात्मा शिव ने दिया था तो सारे विश्व के तथा सभी धर्मों के लोग गीता को विश्वपिता परमात्मा के महावाक्यों का ग्रन्थ मानकर सिर पर धारण करेंगे और शिव-रात्रि को परम श्रद्धा से मनायेंगे और भारत को सर्वोत्तम तीर्थ मानेंगे और गीता की आज्ञाओं का पालन करके श्रेष्ठाचारी बन जायेंगे।

एक रात्रि के लिए खाना छोड़ने की बात नहीं है

इन रहस्यों को जानने पर ही शिवरात्रि को वास्तविक रीति से मनाया जा सकता है और मुक्ति तथा जीवन्मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। तब ही मनुष्य समझ सकता है कि हमें शिव पर आक और धतूरा नहीं चढ़ाना बल्कि ये पदार्थ तो हमारे विषयों अथवा विकारों के प्रतीक हैं और हमें उन विकारों ही को शिव पर चढ़ाना है। तभी हमारी मुक्ति होगी। हमें शिवरात्रि की रात को खाना-पीना बन्द करके ही व्रत नहीं रखना, शिवरात्रि तो कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ के सारे संगम काल का नाम है, इसलिए इस सारे काल में हमें आत्मा का जागरण करना है और ब्रह्मचर्य का व्रत पालन करना है। यदि हम ऐसा न करके एक रात्रि पवित्र रहने के बाद में काम रूपी विष को सेवन करते हैं तो मानो हम केवल एक रात्रि ही 'शिवरात्रि' मनाकर फिर नित्य विष रात्रि मनाते हैं। हम केवल एक रात्रि ही 'शिव संकल्प' और फिर नित्य विष-संकल्प करते हैं। इससे हमारे जीवन का कल्याण नहीं हो सकता। हमें तो वर्तमान संगम युग को 'शिवरात्रि' समझकर सत-युग रूपी दिन चढ़ने तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए और आत्मिक अर्थ में 'जागते' रहना चाहिए। इस प्रकार शिव को जानने से सुख-शान्ति के भण्डारे भर-पूर और काल-कण्टक सब दूर हो जायेंगे।

(गीत)

फूलों की माला बनाई

(ब्र० कु० मोहन, अमृतसर)

चुन चुन के जग के काँटे, फूलों की माला बनाई।
बीच भंवर में डूबती नैया, तूने पार लगाई॥
ज्ञान चन्द्रमा तूने कर दी, धरती पे रिमझिम
सितारों की।
वीरानों में लाई तूने, खुशबू स्वर्ग बहारों की।
पत्थर से बने हीरे मोती, जब तेरी मत पाई
ओ बाबा फूलों की माला बनाई॥
सूखे थे पौदे मुरझाई कलियां, रस तूने भर डाला।
ज्ञान गंगा को लाकर तूने, अमृत दिया निराला।
इन पौदों की हर एक पल ने, तेरी याद दिलाई।
ओ बाबा फूलों की माला·····
गिरे हुओं को उठाकर तूने, चलना हमको सिखलाया।
पंख लगा कर ज्ञान के तूने, उड़ना हमको सिखलाया।
शव समान पड़े मानव को, शिव की लगन लगाई।
ओ बाबा फूलों की माला बनाई॥

शिवरात्री महोत्सव

जैसे शास्त्रों में गीता शिरोमणि है, भूमिखण्डों में भारत शिरोमणि है और आत्माओं में परमात्मा ही सर्वोत्तम पुरुष है और सभी युगों में से संगम युग ही उत्तम है, वैसे ही सभी त्यौहारों में से **'शिवरात्री'** ही सर्वोत्तम त्यौहार है, क्योंकि इसका सम्बन्ध भारत में संगम युग में हुए अव्यक्त-मूर्त्त परमपिता 'शिव' के दिव्य जन्म के साथ है जिस का वर्णन 'श्रीमद्भगवद्गीता' में है।

कलियुग का अन्तिम चरण ही वास्तव में अन्धकार से आवृत्त महारात्री है, जिसमें काम-क्रोधादि भूत खूब अन्धेर मचाते हैं। उस समय को 'ब्रह्मा की रात्री' की अन्तिम वेला मानना चाहिए। उस वेला में भारत-भूमि में, ज्ञानसूर्य परमात्मा शिव का उदय होता है। वह सारी सृष्टि के अंधकार (विष) को हरने के लिए प्रजापिता 'ब्रह्मा', विष्णु तथा शंकर को रचकर प्रजापिता ब्रह्मा के मानवी तन में अवतरित होकर माताओं को ज्ञानामृत का कलश प्रदान करते हैं। इस पुनीत वृत्तान्त का ही स्मरणोत्सव यह शिवरात्री है, जिसे शिव-जयन्ती भी कहा जा सकता है।

शिवरात्री के इस परिचय से स्पष्ट है कि यह त्यौहार केवल परमात्मा ही की याद में नहीं बल्कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर की याद में भी है। यही कारण है कि ब्रह्मा, विष्णु या शंकर की कोई अलग जयन्ती नहीं मनाई जाती।

इस प्रकार शिवरात्री ही संसार का सबसे बड़ा त्यौहार है, क्योंकि यह साकार सृष्टि, सूक्ष्मलोक और परलोक की सर्वमहान् आत्माओं के दिव्य जन्म का स्मरणोत्सव है। लेकिन काल प्रभाव देखिये, आज शिवरात्री जैसे त्यौहार के रहस्य को तथा इससे सम्बन्धित विश्व के मुख्यतम वृत्तान्त को, जिससे कि सभी आत्माओं में और सारी सृष्टि का नक्शा ही पलट गया, आज कोई भी विद्वान-पण्डित, आचार्य, संन्यासी या दार्शनिक नहीं जानता। आज किसी को भी ज्ञान नहीं है कि शिव का जन्म किस प्रकार, कहाँ, कब और क्यों हुआ था। शिव जयन्ती को शिवरात्री ही क्यों कहते हैं और शिव के जन्म से अलग ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर का जन्म क्यों नहीं मनाया जाता और शिव का दिव्य जन्म फिर कब होगा ? बल्कि आज तो मनुष्य, परमात्मा शिव तथा देवता शंकर में भेद भी नहीं जानते और अनेक संन्यासी तथा उनके अनुयायी तो कहते हैं कि मनुष्यात्मा ही शिव है और परमात्मा (शिव) सर्वव्यापी है। इसके अतिरिक्त लोग यह भी नहीं जानते कि परमपिता शिव ही ने गीता-ज्ञान दिया था और इस-लिए वास्तव में शिव-जयन्ती ही गीता-जयन्ती है।

'विजयी रत्न'

(ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुबन, आबू)

कोई मनुष्यात्मा इस संघर्षमय पथ को पार करके विजयी रत्न बन जाते हैं और कोई संघर्षों में उलझकर अपने जीवन की सुख-शान्ति की भी बाज़ी लगा देते हैं। भक्तगण वैजयन्ति माला को फेरकर अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं, तो उन आत्माओं के भाग्य का क्या कहना जो वैजयन्ति माला के मणके बन जाते हैं। प्रस्तुत लेख में लेखक ने वैजयन्ति माला का पूर्ण विवेचन किया है— **सम्पादक**

ईश्वरीय शक्ति लेकर, जिन्होंने माया पर विजय पाने के असम्भव कार्य को सम्भव किया, उनकी ही यादगार यह १०८ मणकों की वैजयन्ति माला है। पुरुषोत्तम संगम युग पर जब योगेश्वर परमात्मा इस धरती पर आये तो उनसे ज्ञान व योग सीखकर १०८ मनुष्यात्माएँ पूर्णतया मायाजीत बनीं। उन्होंने माया के सूक्ष्म अंशों को जानकर उन्हें भस्म किया। इसलिए उन श्रेष्ठ आत्माओं को भक्त, माला के रूप में याद करते हैं।

जैसाकि वैजयन्ति शब्द से स्पष्ट है—"अन्त में विजय", उन १०८ आत्माओं की संगम युग के अन्त तक माया पर पूर्णतया विजय हो जाती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उनकी विजय केवल अन्त में ही होती है। जैसा कि वैजयन्ति माला के पुरुषार्थी अनुभवी हैं कि अन्त में भी विजय उसी की ही होती है जो बहुत काल से माया पर विजय प्राप्त करने के अनुभवी होते हैं। पुरुषार्थी काल में उन १०८ आत्माओं को हर क्षण माया पर विजय का अनुभव होता है। इसीलिए वे परमात्मा के सच्चे रत्न कहलाये जाते हैं। अतः हम सबको ये चैक कर लेना चाहिए कि इस संगम युग पर हमारी माया पर विजय है? अगर हम माया के अधीन हो जाते हैं, तो हम विजय माला के मणके नहीं बन सकेंगे।

विजयी रत्न —आधार मूर्त —

जब ये १०८ रत्न पूर्ण रूपेण अपनी स्थिति में पहुँच जाएँगे तो सृष्टि पर विनाश के नगारे सुनाई देंगे। अर्थात् नवयुग की स्थापना, कलियुग का विनाश और अनेक आत्माओं के भाग्य निर्माण का आधार इन १०८ आत्माओं पर ही है। जब तक ये विजयी रत्न अपनी सीट ग्रहण नहीं करते, तब तक अव्यक्त बाप-दादा, ज्ञान रत्नों से सभी आत्माओं का श्रृंगार करते ही रहेंगे।

विजय रत्न— मुख्य पार्टधारी—

ये १०८ आत्माएँ ही पूरे सतयुग के महाराजा, महारानी व राजा रानी होते हैं अर्थात् सतयुग की पूर्ण बागडोर इन १०८ आत्माओं के हाथ में ही होती है। ये १०८ आत्माएँ ही पूरे सृष्टि-चक्र में मुख्य पार्टधारी होते हैं। सृष्टि चक्र में द्वापर युग के बाद भी जो प्रसिद्ध कार्य हुए वे इन आत्माओं द्वारा ही हुए। इन्होंने ही कई बार इतिहास को चमत्कारिक मोड़ दिये। इन्हीं के द्वारा ही धर्म की रक्षा हुई। इसी कारण इनकी मान्यता भी भगवान् के समान ही है।

विजयी रत्न बनना—सबका लक्ष्य

ज्ञान-योग के अभ्यासियों का लक्ष्य विजयी बनना है। यही सबका लक्ष्य बिन्दु है। पुरुषार्थी के जीवन

में विजयी रत्न बनने का पूर्ण उमंग हो। भगवान को और उसके द्वारा सरल मार्ग को पाकर अगर आत्मा विजयी रत्न न बनी, तो मन पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट नहीं होगा। यही पूरे सृष्टि चक्र की सर्व-श्रेष्ठ प्राप्ति है। माया पर विजय पाने वाले ही प्रभु के दिल व स्वर्ग के तख्त को जीतते हैं। विजयी रत्न बनने की उमंग आत्माओं को स्वतः ही श्रेष्ठ गति में ले चलेगी। इन १०८ में से भी प्रथम ८ आत्माएँ पूर्णतया परमपिता शिव के समान सम्पूर्ण पवित्र बन जाती हैं। इस ईश्वरीय विद्या में वे सम्मान सहित पास (Pass with Honour) होती हैं।

८ की माला में कौन—

भगवान द्वारा प्रदान की जाने वाली सर्वोच्च डिगरी—'पास विद ऑनर', के अधिकारी ये ८ आत्माएँ, चारों ही विषयों में पूर्ण पास होते हैं अर्थात् ७५% से अधिक नम्बर प्राप्त करते हैं। इस ईश्वरीय विद्या के ये ४ विषय हैं—ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग, दिव्य गुणों की धारणा तथा ईश्वरीय सेवा।

ऐसा विश्वराज्य-तख्त जीतने का अधिकारी कौन नहीं बनना चाहेंगे। इसी प्रतिस्पर्धा (Competition) को जीतने की रेस में अनेक आत्माएँ संलग्न हैं। अब हम उन ईश्वरीय महावाक्यों की चर्चा करेंगे जो ८ की माला में आने वालों के लिए ज्ञान-सागर परम शिक्षक ने उच्चारे हैं।

ये आठ आत्माएँ धर्मराज की सजाओं से पूर्ण रूपेण मुक्त होंगी। उससे पूर्व, ये अष्ठ रत्न यहीं पर, योग में मग्न रहते हुए संकल्पों की उलझन की सज़ा से भी मुक्त होंगी। उम्मीदवार सितारे इस प्रकार अपनी चेकिंग कर सकते हैं। ये सभी विषयों में सम्पूर्ण होंगी अतः अब हम एक एक विषय की सम्पूर्णता पर प्रकाश डालेंगे।

ज्ञान में सम्पूर्णता—

ज्ञान में सम्पूर्णता का अर्थ केवल इतना ही नहीं कि उन्हें सम्पूर्ण ज्ञान स्पष्ट होगा। यह तो है ही, परन्तु वे आत्माएँ ज्ञान स्वरूप हो जाएगी।

ज्ञान स्वरूप आत्मा के लक्षण इस प्रकार होंगे—

- उनके मुख से सदैव ज्ञान रत्न झरते रहेंगे। पत्थर उनके मुख की कालिमा नहीं होगी। जो अपनी वाचा को ही दिव्य न बना सके, वे विजयी रत्न बनने के स्वप्न भी नहीं देख सकेंगे।
- उनके मन में सदा ज्ञान का चिन्तन होगा। उन्हें व्यर्थ चिन्तन की अविद्या हो जाएगी।
- उनके हर कर्म ज्ञान-युक्त अर्थात् अलौकिक होंगे। व्यर्थ, लौकिकता या साधारणता उनके कर्मों में दिखाई नहीं देगी। बल्कि देखने वाले यह महसूस करेंगे कि इनके कर्म बड़े दिव्य व महान हैं।
- वे स्वयं को ज्ञान की ऑथार्टी (Authority) महसूस करेंगे। उनके पास ज्ञान एक श्रेष्ठ बल या हथियार के रूप में होगा। ये विघ्न स्वरूप नहीं होंगे। ज्ञान-बल से क्षण भर में विघ्नों को उड़ा देंगे।
- ज्ञान की हर बात पूर्णतया उनके अनुभव में आ चुकी होगी।
- अपने ईश्वरीय विद्यार्थीपन का, ईश्वरीय विद्या का और परम शिक्षक का उन्हें पूर्ण नशा होगा।
- दूसरों को ज्ञान देने में, व सन्तुष्ट करने में उन्हें पूर्ण दक्षता होगी।
- उनके पास ज्ञान की सम्पूर्ण गुह्यता होगी। जिसका प्रत्यक्ष लक्षण होगा—उनकी अडोल स्थिति। मान-अपमान, हार-जीत, लाभ-हानि में अडोल स्थिति।

इन सभी लक्षणों से सहज ही जाना जा सकता है कि मेरे ज्ञान के विषय में कितने नम्बर होंगे।

योग में सम्पूर्णता

ईश्वरीय महावाक्य है—"अन्त तक केवल ८ ही सम्पूर्ण आत्माभिमानी बनते हैं।" इसका अर्थ है देह व देह के सम्बन्धों की पूर्ण विस्मृति। जहाँ मैं-पन सम्पूर्णतया समा जाए और एक शिव बाबा ही पूर्णतया मन में बस जाए—इस प्रकार योग में सम्पूर्णता प्राप्त करने वालों के ये लक्षण हैं—

• वे निरन्तर योगी होंगे। अर्थात् योग की हर स्थिति का लम्बे समय तक श्रेष्ठ अनुभव होगा।

• उनका हर कर्म योग-युक्त होगा।

• योग उनके लिए अभ्यास नहीं रह जाएगा बल्कि वे स्मृति स्वरूप हो जाएंगे।

• उन्हें शिव बाबा से हर सम्बन्ध का ईश्वरीय रस प्राप्त होगा।

• वे एक सेकिंड में अशरीरी-पन के अनुभव में स्थित हो सकेंगे।

इस प्रकार जिनका शिव-बाबा से इतना अथाह प्यार हो जाए कि उनके स्वप्न, संकल्प व संसार ही बाबा हो जाए। उनके मन में एक के सिवाय अन्य किसी की भी छवि न बसे। वही आत्माएँ योग के विषय में सम्पूर्णता प्राप्त करते हैं।

धारणा में सम्पूर्णता—

ज्ञान और योग के बल से उनका जीवन इतना दिव्य गुण सम्पन्न हो जाएगा कि उनके चेहरे से व जीवन से अलौकिकता या देवत्व की अनुभूति होगी। उनके जीवन में केवल किसी एक गुण का बाहुल्य नहीं बल्कि सर्व गुणों का सन्तुलन होगा। जैसे अन्तर्मुखता व रमणीकता, गम्भीरता व हर्षित मुखता, एक ही साथ सर्व गुण व सर्व शक्तियाँ दिखाई देंगी। ऐसे नहीं होगा कि एक शक्ति कर्म में है, परन्तु दूसरी नहीं। सर्व शक्तियाँ एक साथ प्रत्यक्ष रूप में होंगी। जैसे यदि उन्हें कहीं सहन करने की आवश्यकता पड़ी तो सहन करने के साथ-२ वे उस बात को समा भी लेंगे। अर्थात् उसका कहीं भी वर्णन नहीं करेंगे। साथ ही साथ समेट भी लेंगे अर्थात् सर्व संकल्प भी समाप्त कर देंगे। ऐसे नहीं होगा कि सहन करने के बाद मन में संकल्पों का तूफान भी चलता रहे। इसके अतिरिक्त—

• गुणों में त्याग मूर्त, नम्रचित्त, सत्कार व स्वमान में सम्पन्न होंगे।

• आन्तरिक खुशी व सन्तुष्टता से जीवन भरपूर होगा। और मुख्य बात—

धारणाओं के बीज 'पवित्रता' में वे पूर्ण होंगे। कोई भी आकर्षण उनके लिए नीरस होगा। पवित्रता का दिव्य तेज उनके चेहरे पर अलौकिकता बिखेरता होगा।

सेवा में सम्पूर्णता—

सेवा और पद—ये दोनों सम्बन्धित विषय नहीं हैं। सेवा में पद निमित्त मात्र है। विजयी रत्न बनने में पद का महत्त्व नहीं। अतः पद के आधार पर सेवा के नम्बर आँकना यथार्थ नहीं। हाँ कोई विशेष ज़िम्मेदारी या पद स्थिति को श्रेष्ठ बनाने में सहयोगी हो सकता है। सेवा का विषय भी अति गुह्य है जिसमें "मैं और मेरे-पन" के त्याग पर ही नम्बर प्राप्ति का आधार है।

इसमें सम्पूर्णता के चिह्न इस प्रकार होंगे—

चाहे किसी भी प्रकार की सेवा हो, तन की, मन की, स्थूल या सूक्ष्म—उसमें पूर्ण रुचि होगी। साथ ही साथ पूर्ण अनासक्त वृत्ति के साथ अर्थात् पूर्णतया मान-सम्मान की इच्छा रहित। मैं यह सेवा करूंगा, यह नहीं या यह सेवा मेरे योग्य नहीं, मैं तो बड़ा हूं—ये संकल्प सेवा की सम्पूर्णता में अवरोधक हैं। सेवा पूर्णतया निस्वार्थ व बाबा के प्रति हो।

• तन की सेवा अर्थात् अथक होकर रुचि से सेवा करना तथा अपनी सेवाओं का वर्णन न करना।

• मन की सेवा—अर्थात् मन से सभी के प्रति सुखदाई होना तथा शुभचिन्तक होना।

• धन की सेवा—अर्थात् सब कुछ शिव-बाबा का। धन का प्रयोग करते हुए पूर्णतया गुप्त रूप से करना।

• वाचा की सेवा—स्वयं को निमित्त समझकर बाबा द्वारा दिया गया ज्ञान दूसरों को देना।

शिव बाबा के महावाक्य हैं—

जो भी सेवा आपको मिली हो, उस द्वारा ही सेवा में १०० नम्बर ले सकते हो। अगर पूर्ण श्रीमत अनुसार कोई भी सेवा की जाए तो उसमें १०० नम्बर हैं।

इस प्रकार विजय माला के उम्मीदवार रत्न अपनी जाँच कर सकते हैं कि वे कहाँ हैं। ८ की व

१०८ की माला में आने वालों का कुछ तुलनात्मक विवेचन इस प्रकार है—

• ८ रत्न निरन्तर योगी होंगे और १०० रत्नों का योग-अभ्यास प्रतिदिन ८ घण्टे से अधिक होगा।

• ८ रत्न माया पर पूर्ण विजयी होंगे ··इस सम्बन्ध में उनका पुरुषार्थ पूर्ण हो चुका होगा जबकि १०० रत्न—एक, दो या तीन···सेकिंड पुरुषार्थ करने के बाद विजयी होंगे।

• ८ रत्न हैं सम्पूर्णतया शिव-बाबा के समान और १०० होंगे थोड़े-थोड़े कम।

• ये सभी रत्न अपने लिए कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। प्रकृतिदासी होने पर भी उसे सेवा में उपयोग करेंगे।

• इन होवनहार राजाओं का व्यवहार सभी के प्रति ऐसा ही होगा जैसे एक राजा का अपनी प्रजा से या पिता का अपने पुत्रों से···

• इन होवनहार महाराजाओं का कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण राज्य होगा।

• इन हर रत्न में कोई मुख्य विशेषता अवश्य होगी।

इन ८ रत्नों की प्रत्यक्षता संगम युग पर ही अन्त तक हो जाएगी। परन्तु बहुत काल से इन्हें ये सम्पूर्ण निश्चय व आभास रहेगा कि "मैं आठ में हूँ।" इसलिए बहुत समय तक वे अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य का आनन्द लेते रहेंगे। और भक्त यहीं पर उन्हें अपने इष्ट देव के रूप में स्वीकार करेंगे।

०००

—ओ गुलशन के माली—

ब्र० कु० मधुकर नान्देड

ओ गुलशन के माली,
तूने जहाँ में छा दी हरियाली।
दुःखी था सारा जहाँ,
जब तुम आये यहाँ।

मानव परेशान था,
माया से हैरान था
फूट-फूट कर रोता था,
असुओं से मुंह धोता था।

तुझसे मिलना चाहता था,
मार्ग अनेक अपनाता था।
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे,
गिरजाघर द्वारे-द्वारे।

जप-तप दान-पुण्य करता था,
तेरा ही नाम सुमिरता था।
हठयोग नित्य प्रति करता था,
जल थल नभ में विचरता था।

पर कहीं न तुमको पाता था,
सिर धुन-धुन कर पछताता था।
संगम की आयी ये घड़ी सुहानी,
ब्रह्मा तन में पधारे शिव पिता रुहानी।

राजयोग मानव को सिखाते,
सुख-शांति का खज़ाना लुटाते।
कांटों को ये फूल बनाते,
जीवन में खुशहाली लाते।

पृष्ठ २४ का शेष जब मैं कृष्ण बना

बात का मुझे पक्का निश्चय हो गया। वास्तव में मैं ही खुद मूर्ख था जो कि उनके चरित्र को पढ़कर चरित्रहीनता का परिचय दे रहा था। अब मैं ऐसा अनैतिक कार्य कभी नहीं करूंगा और कृष्ण के समान सोलह कला संपूर्ण, सर्वगुण संम्पन्न बनने का पुरुषार्थ करूंगा।

भागवत प्रसाद धन्य हो बेटे, मुझे तुझसे यही उम्मीद है। तुझमें इतने अच्छे विचार आये इसके लिए मैं परमपिता परमात्मा का शुक्र गुजार हूं—कि उन्होंने हम दोनों को ज्ञानी बनाकर सही मार्ग दिखाया।

(परदा गिरता है)

प्रश्नों के उत्तर

(पिछले अंक में पृष्ठ ११ पर क्लास के लिये जो प्रश्न प्रकाशित हुए थे, उनके उत्तर)

१. पुरुषार्थ ठण्डा होने का सूक्ष्म कारण

पहला प्रश्न यह था कि ज्ञान-मार्ग पर चलते-चलते यदि किसी अच्छे ज्ञानवान का पुरुषार्थ कभी ठण्डा हो जाता है तो उसका सूक्ष्म कारण कौन-सा है ? इस प्रश्न के कई उत्तर सम्भव हैं। यह भी कहा जा सकता है कि मार्ग में आने वाले विघ्नों से घबरा जाते हैं अथवा थक जाते हैं अथवा किसी स्वभाव-कुभाव के कारण ढीले हो जाते हैं। परन्तु देखा गया है कि पुरुषार्थ ठण्डा होने का एक अन्य भी कारण होता है। वह यह कि कई ज्ञानवान पुरुषार्थी अपने पुरुषार्थ की प्रारब्ध को देखने लग जाते हैं। अर्थात् वे अपने लिये विशेष प्रकार की सुविधाओं, खान-पान, मान-दर्जा आदि की आशा करने लग जाते हैं। जब ये तथा अन्य ऐसी इच्छायें पूर्ण होती उन्हें दिखाई नहीं देतीं तो वे निराश, हताश और उदास हो जाते हैं और उनका पुरुषार्थ ठण्डा हो जाता है। ये वास्तव में हीन विचार हैं और माया ही का एक वार है। पुरुषार्थी को तो अपने पुरुषार्थ ही पर ध्यान देना चाहिए। पुरुषार्थ से ध्यान हटा कर प्रारब्ध की ओर देखने लग जाना ही पुरुषार्थ को ठण्डा करना है।

विकारों को जीतने के लिये सूक्ष्म सेना

दूसरा प्रश्न था कि वह कौन-सी सेना है जिसकी सहायता से हम विकारों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं ?

विकार सूक्ष्म शत्र हैं, उनसे युद्ध करने वाले भी तो सूक्ष्म ही चाहियें। अतः उत्तर में हमें ऐसी सेना बतानी चाहिए जो सूक्ष्म हो। अधिक सोचने पर आप मानेंगे कि वह सेना है—ब्रह्मचर्य, प्रेम, सन्तोष, अनासक्ति, नम्रता आदि की सेना। काम से लड़ने के लिए ब्रह्मचर्य, क्रोध से लड़ने के लिये प्रेम, सहनशीलता और मृदु स्वभाव अथवा हर्ष, लोभ को जीतने के लिए सन्तोष अथवा आत्म-तृप्ति, मोह को जीतने के लिए अनासक्ति अथवा उपराम-भाव, अहंकार को पराजित करने के लिए नम्रता, ईर्ष्या को जीतने के लिए उदारता, द्वेष को जीतने के लिए सद्भावना, आलस्य को जीतने के लिए पुरुषार्थ और तत्परता, इन्द्रिय-चपलता पर विजय प्राप्त करने के लिए आत्मा-निश्चय और संयम आदि-आदि दिव्य गुणों की सेना की सहायता लेंगे तभी तो आपको पवित्रता का लक्ष्य सिद्ध होगा। यदि आप सोचते रहेंगे कि 'काम विकार हमारे मन से हटेगा तभी तो ब्रह्मचर्य की धारणा होगी और क्रोध का संस्कार मिटेगा तभी तो स्वभाव में मृदुता और मन में हर्ष आयेगा, आदि-आदि' तब तो आपके बुरे संस्कार मिटेंगे ही नहीं और विकार मरेंगे नहीं। जब आप ब्रह्मचर्य, सहनशीलता, अनासक्ति, सन्तोष, नम्रता आदि-आदि पर ध्यान देंगे, उन्हें धारण करेंगे अथवा उनकी सेना की सहायता लेंगे तभी विकार मरेंगे। दिव्य गुणों को धारण करना ही विकारों को जीतने की युक्ति है जैसे कि प्रकाश करना ही अन्धकार को भगाने का उपाय है। □

यावतमाल में विश्व शान्ति सम्मेलन में प्रवचन करती हुई, ब्र० कु० हृदय-मोहिनी जी, मंच पर विराजमान हैं, डी० एफ० ओ० माधव राव, एस० एल० कुलकर्णी, सु० जेल यावतमाल, भ्राता मल्होत्रा जी, ब्र० कु० चक्रधारी तथा ब्र० कु० किरण।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

(ब्र० कु० सत्यनारायण तथा श्रीराम, कृष्णानगर, देहली द्वारा संकलित)

चंडीगढ़—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर 17 से 19 दिसम्बर तक 'विश्व शांति सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसमें (i) वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक सम्मेलन (ii) चिकित्सक सम्मेलन (iii) महिला सम्मेलन (iv) शांति सम्मेलन के कार्यक्रम रखे गए। इस सम्मेलन में अनेक प्रवक्ताओं ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए जिनमें सी. एस. आई. ओ. के डायरेक्टर भ्राता हर्षवर्धन, भ्राता माथुर जी, दादी चंद्रमणि, भ्राता जगदीश चन्द्र जी, न्यूरो सर्जरी के प्रमुख डा. गुलाटी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, ब्र० कु० आशा जी, ब्र० कु० चक्रधारी जी तथा पंजाब के राज्यपाल भ्राता चन्नारेडी जी के नाम उल्लेखनीय हैं। कारमल कन्वेंट स्कूल के बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी बहुत आकर्षक था। इस प्रकार यह तीन दिन का कार्यक्रम बहुत उमंग-उल्लास से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

भंडारा—उपसेवा केन्द्र से ब्र० कु० शकुन्तला तथा ब्र० कु० दादुभाई लिखते हैं कि सोमनाला, बाचेवाड़ी, ब्रह्मी पिपलगांव पांदरा बोडी, शहापुर तथा भंडारा आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो, प्रवचन के विविध कार्यक्रम आयोजित किये गए, जिनके परिणामस्वरूप लगभग 6000 आत्माओं को परमपिता का दिव्य संदेश मिला। 16 सूत्री कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए भी सर्विस के तथा ब्राह्मणों की उन्नति के लिए सेवाकेन्द्र पर विभिन्न कार्यक्रम रखे जाते हैं।

फरीदाबाद—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दिसम्बर मास में 'विश्व शांति पथ-प्रदर्शक मेले' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन राज्यमंत्री स्थानीय प्रशासन हरियाणा, भ्राता ए. सी. चौधरी ने किया। 1500 भाई-बहिनों की संगठित एक शोभायात्रा भी निकाली गई। 'प्रैस कान्फ्रैंस' तथा 'विद्यार्थी-उत्सव' भी रखा गया। निबंध प्रतियोगिता में भाग लेने वाले 9 स्कूल के बच्चों में से अग्रवाल हाई स्कूल बल्लबगढ़ ने प्रथम पुरस्कार चल शील्ड जीता। प्रैस कान्फ्रैंस में मुख्य प्रवक्ता ब्र० कु० मनमोहिनी दीदी जी तथा भ्राता जगदीश चन्द्र जी थे। मेले को लगभग 80 हजार दर्शकों ने देखा तथा 250 योगाभिलाषियों ने राजयोग शिविर में भाग लिया।

गांधी नगर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि तृतीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में दो दिन के लिए 'विश्व-शांति-सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसमें 1000 आत्माओं ने भाग लेकर परमपिता का संदेश प्राप्त किया।

नारायणपुरा—(अहमदाबाद) सेवाकेन्द्र की ओर से नवरंगपुरा क्षेत्र की आत्माओं को ईश्वरीय संदेश देने हेतु पांच दिन के लिए प्रदर्शनी, झांकी, राजयोग शिविर, प्रवचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें अनेक गणमान्य व्यक्तियों तथा आम जनता ने भाग लिया। राजयोग शिविर से भी 30 आत्माओं ने लाभ उठाया।

मणिनगर—(अहमदाबाद) सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० सरला लिखती हैं कि 'पौठा' मेले में तलोद में तथा विरमगाम में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, झांकियां तथा राजयोग शिविरों के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

बिलासपुर—सेवाकेन्द्र के समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर तीन दिन के लिए विश्व-शांति आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। सारे शहर में शोभायात्रा झांकियों सहित निकाली गई। इनके द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

बड़ौदा—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्ती गांवों में ईश्वरीय संदेश देने हेतु सामियाला, सिधरोह, कलाली और वरजामा आदि गांवों में प्रभात फेरी, विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन और प्रोजैक्टर शो आदि के कार्यक्रम चले, जिनके द्वारा लगभग 6000 आत्माओं ने लाभ उठाया। बड़ौदा डेरी के कार्यकर्त्ताओं का स्नेह-मिलन भी रखा गया जिसमें 'श्रेष्ठ कैसे बने' विषय पर प्रवचन हुआ।

जूनागढ़ सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० दयमन्ती लिखती हैं कि खरेड़ी गांव टोलागांव, वांटवा, बामणगांव, कानावडाला, अनीडा कालावड आदि गांवों में, जूनागढ़ के 'वैभव होटल' में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रवचन, योगशिविर तथा स्नेह मिलन के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनसे अनेकानेक

सतयुग और बीज की शक्ति

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई

बचपन की एक छोटी-सी बात है—बंबई जैसे शहर में बच्चों ने भैंस देखी नहीं होगी और गाय को देखा हो, तो भी गाय दूध कैसे देती है यह न जानने के कारण जब एक स्कूल में शिक्षक ने बच्चों से पूछा कि दूध कौन देता है तो एक बच्चे ने कहा कि 'भैया (अर्थात् प्रातःकाल या दोपहर में दूध देने वाला नौकर) देता है'। यदि कोई मोर पंछी को देखकर ऐसा सोचे कि इस मोरपंख में इतने सुहावने रंग कैसे आये ? किसने इतने उत्कृष्ट रंग बनाये होंगे ? एक कवि ने इसलिये ही कहा है "मोर के पंख में रंग मोहन किसने डाले ?" मोर पंख की उत्पत्ति कैसे हुई यह न जानने के कारण कोई कहता है कि क्या एक कलाकार ने यह रंग बनाया या भरा होगा ? ऐसे ही शरीर की रचना और उत्पत्ति को यथार्थ रूप से न जानने वाले यदि ऐसा प्रश्न मन में करें कि यह आँख, कान, मन, बुद्धि, हृदय आदि कैसे बने ? क्योंकि आज के वैज्ञानिक अपनी प्रयोग-शाला में ऐसी कर्मेन्द्रियाँ नहीं बना सकते हैं। सच्ची आंख, कान, हृदय इत्यादि को वैज्ञानिक अभी तक नहीं बना पाया है। तो अवश्य ही प्रकृति द्वारा बने बनाये शरीर रूप में कर्मेन्द्रियाँ देखकर अल्पज्ञ मनुष्य हैरान होगा ? इसी प्रकार ज़मीन में एक बीज डाल कर उससे अनेकानेक कणों की उत्पत्ति देखकर सामान्य मनुष्य तो आश्चर्यवत देखता ही रहेगा कि एक से अनेक, एक समान कणों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

इसलिये बीज की इस शक्ति को समझना जरूरी है। बीज को न जानने के कारण कई बातों को नहीं जान सकते। वृक्ष में आदि में बीज होता है, उससे तना, पत्ते, फल तथा अंत में फल निकलते हैं और उसी फल से बीज होने या कई बार फल ही बीज होता है। आदि में बीज, बीच में विस्तार और फिर अंत में बीज जो फिर नये वृक्ष की उत्पत्ति का कारण होता है। विस्तार को जाना, परन्तु सार रूपी बीज को नहीं जाना तो आगे के विस्तार को नहीं जान सकते। इसलिए बीज को जानना अति आवश्यक है।

आज के विश्व में विस्तार को जानने वाले बहुत हैं परन्तु बीज को और बीज की शक्ति के यथार्थ रूप को सब नहीं जानते और यही कारण है कि सृष्टि रूपी वृक्ष के आदि को और वर्तमान में होनेवाले अंत को भी सब नहीं जानते हैं।

बीज सदा चैतन्य शक्ति से परिपूर्ण होता है। बीज में सारे वृक्ष का विस्तार समाया होता है। वृक्ष में नीचे जड़ें हैं ऊपर तना, डाल, डालियाँ, शाखा-उपशाखाएं तथा पत्ते भी हैं परन्तु हरेक की शक्ति अलग है। आम (Mango) के फल में जो मिठास है वह आम के वृक्ष के तने, डाल या पत्तों में नहीं है। नारंगी (Orange) फल में जो मधुर रस है वह उसके पत्तों में नहीं है और उस फल में ही बीज हैं जो अनेक नारंगी के वृक्षों का निर्माण कर सकते हैं।

उसी प्रकार आज के इस सृष्टि रूपी नाटक में शक्ति बहुत है परंतु उसमें बीज रूप परमात्मा की जो शक्ति है वह शक्ति अन्य सभी जैसे कि आत्मा, प्रकृति के पाँच तत्व आदि की, शक्ति से अलग है। बीज रूप परमात्मा में नये सृष्टि चक्र रूपी कल्पवृक्ष के तना रूपी सतयुग और उस सतयुगी सृष्टि में आनेवाली आत्माओं का नव-निर्माण करने की शक्ति

है। सिद्धांत को समझाने के लिए स्थूल बीज का यह उदाहरण (Example) दिया है। स्थूल बीज से अंकुर आदि निकलने के बाद, बीज बीज नहीं रहता। परन्तु यह चैतन्य बीज है जिसे चैतन्य उदाहरण के रूप में समझना है। जैसे माँ-बाप का बच्चों को जन्म देने के पश्चात् भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व रहता है। बच्चे फिर अपने बच्चों के लिए बीज बनकर कुल के वृक्ष का विस्तार करते हैं। परन्तु बच्चा फिर अपने माँ-बाप का माँ-बाप नहीं बनता। बच्चा सदा ही वृक्ष के अंदर बच्चे का रूप धारण करनेवाली आत्मा अपने माँ-बाप का माँ-बाप नहीं बनता—रचना सदा रचयिता की रचना ही रहती है। परमात्मा को सर्वव्यापी माननेवाले कहते हैं कि आज अणु की शक्ति को विज्ञान ने माना है। अणु में न्यूट्रोन, इलेक्ट्रोन, प्रोटोन हैं। अणु का विस्फोट करने से अणु रूपी बीज विनाशक बन जाता है अर्थात् आज अणु की शक्ति को विज्ञान ने माना है तो कल वही शक्ति परमात्मा है—ऐसा विज्ञान मानेगा और इस प्रकार परमात्मा को अणु-अणु में (हरेक बीज में) व्यापक है—ऐसा भविष्य में सिद्ध होगा।

परन्तु सभी शक्ति एक समान नहीं है। प्रकृति की चैतन्य शक्ति, आत्मा की चैतन्य शक्ति और सर्वशक्तिवान परमात्मा की सर्वशक्तियाँ एक समान नहीं हैं। प्रकृति अपनी शक्ति के आधार से मोरपंख जैसी सुन्दर वस्तु या मानव हृदय या आंख, कान आदि का निर्माण कर सकती है। ऐसे ही परमात्मा की बीज रूप शक्ति परिवर्तन के आधार पर, आदि श्रेष्ठ युग और आदि श्रेष्ठ मानव की रचना कर सकती है। विज्ञान ने परमात्मा की बीज रूप शक्ति को नहीं जाना और माना इसी कारण आदि युग को पत्थरयुग और मानव के आदि को बंदर कहा है। अभी अभी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें डार्विन के उत्क्रांति सिद्धान्त को चुनौती दी है और पूछा है कि यदि आज कब्रिस्तान में एक दादा (Grand Father) और एक पौत्रे (Grand Son) के अस्थिपंजर (Skeleton) निकाल संशोधन करें तो क्या सिद्ध हो सकेगा कि ये दोनों आपस में दादा-पौत्रे के संबंध में थे ? उनकी खोपड़ियों की तुलना से यदि उनका धम्बन्ध सिद्ध नहीं हो सकता तो मिले हुए खोपड़ियों के कुछेक टुकड़ों से बंदर मानव का आदि पूर्वज था वह कैसे मानते हो—ऐसा लिखकर लेखक ने वैज्ञानिकों को चुनौती दी है। परमात्मा की बीजरूपी शक्ति से विश्व-परिवर्तन का कार्य, आदि युग—सतयुग तथा आदि मानव—देवी-देवताओं का निर्माण कैसे होता है यह इतिहास सिर्फ ब्रह्माकुमारी और ब्रह्माकुमार ही जानते हैं क्योंकि उन्हें इस परम बीज की सर्वशक्तियों का अनुभव है।

शक्ति कोई साधारण वस्तु नहीं है। इस सृष्टि में अनेक प्रकार की शक्तियाँ हैं। शक्तियों को धर्म-सत्ता ने भी माना है और इसी कारण शक्तिपूजन के उत्सव, शक्तियों के मंदिर आदि बनाये हैं। राज-सत्ता यह भी शक्ति है। राजसत्ता रूपी शक्ति को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के युद्ध लड़े गये। धन—यह भी शक्ति है जिसकी प्राप्ति के लिए कई मनुष्य सारा जीवन उसी में बिताते हैं। जानते भी हैं कि सब खाली हाथ आये और अंत में खाली हाथ जायेंगे। फिर भी धन की शक्ति प्राप्त करने की आकांक्षा अंत तक सबमें रहती है। बुद्धि—यह भी शक्ति है जिस कारण एक ही कक्षा (Class) में पढ़ने वालों में कोई पहला नंबर तो कोई आखिर का नंबर लेता है। मन की शक्ति भी विशेष है। मन ही मोक्ष और बंधन का कारण है ऐसा गीता में गायन है तो 'मन्मनाभव' का महामंत्र परमपिता परमात्मा देते हैं। परंतु इसका मतलब यह नहीं कि मन की शक्ति ही परमात्मा है। बीजरूप परमपिता परमात्मा शक्ति का सागर है, सर्वशक्तिवान है, इसका अर्थ यह नहीं कि सर्वशक्ति परमात्मा है या परमात्मा का रूप है। परमात्मा प्रेम, स्नेह का सागर है अर्थात् सर्व-श्रेष्ठ प्रेम सिर्फ परमात्मा ही दे सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि प्रेम परमात्मा है।

इस पर एक अंधे की कहानी है, उसने पूछा दूध

क्या है तो उसे बताया गया कि दूध श्वेत, शुभ्र-सफेद होता है। उसको दूसरा प्रश्न उठा कि सफेद क्या चीज है ? तो कहा गया कि बगुला जैसे सफेद-श्वेत होता है। फिर उसने पूछा कि बगुला क्या है तो उसको उत्तर में बताया गया कि जिसकी गर्दन (Neck) गोलाकार होती है वह बगुला है। तब उस अंधे ने कहा कि अब मैंने समझा कि दूध क्या है—दूध माना जिसकी गर्दन गोल है, वह है। ऐसे ही शक्ति की यथार्थ पहचान न होने के कारण और उसमें भी बीजरूप परमात्मा की शक्ति की यथार्थ पहचान न होने के कारण साधक अपनी साधना की शक्ति को व्यर्थ गंवाते हैं। गाते भी हैं कि हमें शक्तिपाद की अनुभूति चाहिये। कई फिर कुंडलिनी की शक्ति को मानते हैं लेकिन उन्हें ज्ञात रहे कि कुण्डलिनी शक्ति की उपासना भी एक प्रकार की शरीर अर्थात् भूत-पूजा है— न उसमें आत्मा की उन्नति है और न ही उससे बीजरूप परमात्मा की प्राप्ति है। शरीर एक बहुत बड़ी अनेक प्रकार की शक्तियों का भंडार है। यह पाँच महाभूत का बना है, उसमें ५ गुणेंद्रिय और ५ कर्मेन्द्रिय भी हैं और उसमें अनेक चक्र भी हैं। गुणेंद्रिय और कर्मेंद्रियों की अपनी-अपनी शक्ति है। गले में शब्दोच्चार करने की शक्ति है तो आँख में देखने की शक्ति है तो विशुद्ध अनाहुत, मणीपुसा, स्वाधी-स्थान और मूलाधार रूपी चक्र भी हैं। एकाग्रता की शक्ति द्वारा आँख की शक्ति बढ़ती है और शक्ति-वर्धन की अनुभूति भी होती है। कुंडलिनी शक्ति अर्थात् चक्रों की सुषुप्त शक्ति जब जाग्रत होती है तब सर्पाकार से ऊपर को बढ़ती है और उस समय आवाज भी आती है। यदि इस कुंडलिनी शक्ति को यथार्थ रूप में और योग्य मार्गदर्शन द्वारा संवर्धन नहीं किया तो विघ्न रूप बनती है। मेरे परिचित दो व्यक्तियों ने कुंडलिनी शक्ति की आराधना की थी परंतु योग्य मार्गदर्शन के अभाव से एक व्यक्ति में ऐसी विकृति हो गई कि वह जब भी परमात्मा को याद करने के लिए स्थिर बैठता था तो उसका पेट अंदर चला जाता था, आँखें ऊपर की ओर तथा जीभ बाहर निकल आती और सारा ही शरीर हिलने लगता था। पेट अंदर दब जाने से पेट की बीमारी भी हो गई और कई विकृतियाँ हो गईं।

उस व्यक्ति को मैंने बंबई में बुलाया और सेवा-केन्द्र पर ले गया। वहाँ उसे हठयोग की क्रिया करके दिखाने के लिए कहा और बाद में परमात्मा की याद में बिठाया। उसके सामने संदेशी के रूप में दादी पुष्पशांताजी बैठी। तुरंत ही उस व्यक्ति का पेट अंदर, जीभ बाहर, आंखें ऊपर चली गईं और शरीर घड़ी के पेंडुलम (Pendulam) की तरह हिलने लगा। दो मिनट के पश्चात् उस भाई ने परमात्मा को याद करना बंद किया और वह अपनी पूर्ववत अवस्था में आ गया। संदेशी को प्यारे बाबा ने संदेश दिया कि उस भाई को परमात्मा का यथार्थ परिचय देकर ७ दिन तक सेवाकेन्द्र पर विशेष रूप से रोज एक घंटा योग कराया जावे। परमात्मा के सच्चे परिचय के आधार पर, विधिपूर्वक योग करने से उनकी कुंडलिनी जो शरीर के अंदर उल्टे रास्ते पर चली थी, फिर से अपने स्वस्थान पर आ गई। तब शिव बाबा ने बताया कि यह कुंडलिनी का हठ-योग भी शरीर के आधार से किये गये योगों में से एक है। राजयोग तो आत्मा की स्थिति श्रेष्ठ बनाता है। कुंडलिनी योग में अंत में भृकुटी के बीच में सहस्र कमल तक पहुंचते हैं लेकिन राजयोग का प्रारम्भ स्थान ही आत्मा है।

ऐसे ही एक-दूसरे व्यक्ति के भी कुंडलिनी के हठयोग की गलत विधि से उत्पन्न हुए दूषण को, शिव बाबा की मदद से, ठीक किया। आज के अन्य प्रकार के सर्वयोगों में शरीर की विविध प्रकार की शक्ति बढ़ती है। परन्तु राजयोग में बीज की शक्ति अर्थात् आत्मा की शक्ति बढ़ती है। शारीरिक शक्ति का संवर्धन अल्पकाल का फल देता है और बीजरूप आत्मा की शक्ति की संपन्नता सतयुगी सृष्टि को वरसा देती है। बीजरूप आत्मा की शक्ति की उपासना आज के सभी प्रकार के शक्ति के उपासक करें तो उन्हें यथार्थ फल मिलेगा और उनकी साधना

सफल और सुखद होगी ! इसी तरह विज्ञान भी बीज रूप परमात्मा और उसकी रचना को पहचानेगा तो विश्व के आदि-युग तथा आदिमानव के बारे में जो झूठे सिद्धान्त बनाये हैं उन्हें छोड़ेगा और अपनी गलती के कारण विज्ञान ने जिन्हों को अज्ञान-अंधकार में रखा है वे सब सच्ची मंजिल के राही बनकर सतयुगी सृष्टि में आ सकेंगे।

शक्ति को यथार्थ रूप में समझने से धर्मनेताएं गुण और गुणी के बीच में जो फर्क है उसे समझ सकेंगे। साध्य और साधन के बीच का फर्क समझने से साधना में फर्क करेंगे। परमात्मा प्रेम का सागर है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि प्रेम रूपी शक्ति परमात्मा है। इसलिये प्रेम की शक्ति की आराधना करने वाले या अन्य शक्ति के उपासक, शक्ति की आराधना छोड़कर, गुण की आराधना के बदले गुणी सर्वशक्तिवान बीजरूप परमात्मा के साथ अपना सच्चा सम्बन्ध जोड़ेंगे। दुनिया में अधिकांश आराधनाएं शक्ति की आराधनाएँ हैं परंतु सर्वशक्तिवान बीजरूप परमात्मा की आराधनाएं कम हैं। राजयोग सर्वशक्तिवान बीजरूप परमात्मा की सच्ची पहचान देता है जिससे साधक अन्य सब साधनाएं छोड़ सच्चे राजयोगी बन बीजरूप परमात्मा के साथ अपना बुद्धियोग जोड़ेंगे। और सतयुगी सृष्टि में आने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। इसलिये आज धर्म और विज्ञान दोनों ही क्षेत्रों में बीजरूप परमात्मा की सच्ची पहचान देना अति आवश्यक है। जब धर्म और विज्ञान दोनों ही बीजरूप परमात्मा को पहचानेंगे तब धर्म और विज्ञान एक हो जायेंगे, दोनों में रही भौतिकता तथा भ्रांतियाँ खत्म होकर मौलिकता के आधार पर अपने मालिक को पहचानेंगे। तो आइये हम सबको बीजरूप परमात्मा की पहचान देकर सतयुगी सृष्टि की स्थापना करें।

"शिव बाबा"

गौतम भाई, वणी, (महाराष्ट्र)

परमपिता परमात्मा जिनका शिव बाबा है नाम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम॥
परमधाम के वासी हैं वो संगम युग पर आते हैं।
प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठ ज्ञान बतलाते हैं।
ज्ञान को जो कोई धारण करले पहुंचे वह सुखधाम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम॥ १॥
शाम, सुबह मुरली के द्वारा उनकी श्रीमत मिलती है।
शिव बाबा की श्रीमत पर ही आत्मा जो कोई चलती है।
होती है वह सुंदर फिर से, बन गयी है जो श्याम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम॥ २॥
श्रीमत की यह लछमन रेखा लाँघती जब हम सीताएँ।
माया रावण का हक हम पर उसी समय से होता है।
रावण की इस कड़ी कैद से वही छुड़ाये राम।
पतित जनों को पावन करना यही है उनका काम॥ ३॥

आत्मा-परमात्मा तथा मेरा अनुभव

लेखक : ब्र० कु० आर० के० सिंह,
प्रशासन अधिकारी, चन्द्रपुर

आत्मा, परमात्मा के रूप अथवा साईज़ में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों ही सूक्ष्म ज्योति बिन्दुस्वरूप हैं। अन्तर केवल इतना है कि परमात्मा कभी पतित नहीं बनते और आत्मा कभी पतित, कभी पावन बनती है। परमात्मा वर्तमान, भूत, भविष्य का जाननहार हैं, ज्ञान का सागर, निराकार हैं। जब तक आत्म-ज्ञान नहीं होता परमात्मा का ज्ञान असम्भव है। सभी कहते हैं 'ओम नमो शिवाय' ओम का मतलब प्रायः भगवान से लगा लेते हैं, परन्तु वह गलत है। ओम का अर्थ "आत्मा, अहं" होता है। आत्मा का स्वधर्म शान्ति है। आत्मा जब शरीर धारण करती है तो देहाभिमान के कारण आत्मा अशान्त हो जाती है। बिना परमात्मा की याद से पुराने पाप नष्ट नहीं हो सकते। भक्त लोगों को भी कभी कभी जिस देवता की पूजा करते हैं साक्षात्कार हो जाता है, वह साक्षात्कार परमात्मा ही देवताओं के माध्यम से भक्तों को कराते हैं। भक्ति मार्ग से सद्गति नहीं हो सकती, राजयोग से सदगति मिलती है क्योंकि भक्ति मार्ग में दैहिक क्रियायें होती हैं और राजयोग एवं ज्ञान में आत्मिक स्मृति रहती है।

शिव ही परमात्मा हैं

अपने इस भारत देश में कोई राम को भगवान कहता है, कोई कृष्ण को भगवान कहता है, कोई विष्णु को भगवान कहता है, कोई शंकर को भगवान कहता है। लेकिन भगवान तो देहधारी हो ही नहीं सकता वह तो ज्योतिस्वरूप निराकार ही हैं। प्रायः यह हमेशा नारा सुनते हैं कि हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आपस में भाई भाई हैं। अगर ये आपस में भाई भाई हैं तो प्रश्न उठता है कि इन सबका पिता कौन है? शारीरिक दृष्टि से तो भाई भाई हो ही नहीं सकते क्योंकि लौकिक रूप में उनके माता पिता अलग अलग हैं। हां आत्मिक दृष्टि से ही सभी एक पारलौकिक निराकार परम-पिता परमात्मा की संतान होने के नाते से भाई भाई हैं अर्थात रचयिता एक है रचना अनेक है। इस दशा में अगर ऐसी स्मृति सभी में आ जाये तो राष्ट्रीय एकता को निश्चय ही बल मिलेगा।

यह प्रश्न उठता है कि वह एक पारलौकिक परमपिता, परमात्मा कौन है? प्रायः हर धर्म के अनुयायी निराकार ज्योतिस्वरूप, परमात्मा शिव को किसी न किसी प्रकार से मान्यता देते हैं। भारत में कहते भी हैं "त्वमेव माता च पिता त्वमेव"। शिव की पूजा राम ने भी की है। रामेश्वरम में राम को शिव लिंग की स्थापना करते दिखाया गया है। मुसलमानों के मुख्य तीर्थ मक्का में भी इसी प्रकार का पत्थर है जिसे कि सभी मुसलमान यात्री बड़े प्यार से चूमते हैं। इटली रोमन कैथोलिक ईसाई भी इसी प्रकार प्रतिमा को मानते है। ईसाइयों के धर्मस्थापक तथा सिक्खों के धर्मस्थापक नानकजी ने भी परमात्मा को निराकार ज्योति ही माना है। जापान में भी बौद्ध धर्म के कुछ अनुयायी इसी प्रकार की प्रतिमा अपने सामने रखकर अपना मन एकाग्र करते हैं। यह भी आश्चर्य की बात है कि एक तरफ तो परमात्मा को माता-पिता तथा पतित-पावन कहते हैं तथा दूसरी तरफ परमात्मा को घट घट व्यापी तथा सर्वव्यापक

भी कहते हैं। अपने पिता को यानी भगवान को कुत्ते में भी, बिल्ली में भी, सूवर में भी, बिच्छू में है कहना कितना कृतघ्न बनना है। फिर तो कुत्ता, बिल्ली, सूवर इत्यादि भी हमारे माँ बाप तथा भाई हुये। अरे भाई, भगवान परमपिता तो एक ही है। यदि परमात्मा सर्वव्यापी होता तो उसके शिवलिंग रूप की पूजा क्यों होती, अगर भगवान सर्वव्यापी होता तो हर व्यक्ति उसके अवतरण के लिये प्रार्थना क्यों करते हैं। भक्त कहते हैं—पतित पावन आओ। अतः पिता तो कभी सर्वव्यापी नहीं हो सकता। अगर भगवान सर्वव्यापी है तो स्त्री-पुरुष का विकारी नाता तथा एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य का वैमनस्य क्यों ? परमात्मा को सर्वव्यापी कहना महापाप है।

उपरोक्तानुसार यह सही है कि **परमप्रिय शिव ही ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, कल्याणकारी, जीवन-मुक्ति के दाता,** पुर्नजन्म रहित ब्रह्मलोक के निवासी, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं।

अतः परमपिता परमात्मा शिव ही परमात्मा या भगवान हैं। परमानन्द सदानन्द, परमात्मा शिव से योग लगाने से सभी विकार अपने आप ही दूर हो जाते हैं।

मेरा स्वयं का अनुभव

अब मैं अपना स्वयं का अनुभव वर्णन करता हूं कि मुझे कैसे प्रभु लगन लगी। मैं एक मध्यम परिवार से हूं। मेरा परिवार भक्ति मार्ग में बहुत आगे था, मेरे लौकिक पिताजी बड़े अच्छे पुजारी थे। वे दुर्गा, गायत्री तथा शिव के पुजारी थे। लेकिन शिव को शंकर मानकर पूजते थे। मैं भी धीरे धीरे उनका अनुकरणीय बन गया। और करीब करीब १२ साल से भक्ति मार्ग में चलता रहा, देवी-देवताओं की पूजा करता रहा। करीब एक साल पहले एक भाई जो कि मेरे ही कार्यालय में कार्यरत हैं उनके संपर्क में आया तथा सात माह पहले उनके आग्रह पर मैं चन्द्रपुर, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेन्टर पर अपनी लौकिक पत्नी के साथ गया। मैं तथा मेरी लौकिक पत्नी सेन्टर की इन्चार्ज आदरणीया बहन का निस्वार्थ सेवा और प्रेम देखकर प्रभावित हुये बिना न रह सके। हालांकि मेरे घर से सेन्टर करीब छः किलोमीटर दूर है फिर भी धीरे धीरे सेन्टर जाने का जोश बढ़ गया और आज ऐसा हो गया है कि अगर किसी दिन किसी कारणवश सेन्टर नहीं जा पाया तो ऐसा लगता है कि कुछ बहुमूल्य वस्तु खो दी है।

करीब चार माह पहले अचानक मेरी लौकिक पत्नी की, जबकि हम दोनों सेन्टर से शाम को पौने नौ बजे घर लौटे थे, अचानक आँखों की रोशनी जाती रही। वह समय मेरे लिये सचमुच कसौटी का था। तरह तरह के विचार मन में आने लगे। लेकिन पत्नी ने स्वयं मेरी हिम्मत बढ़ाई और बोली परेशान क्यों हो रहे हैं, ड्रामा को स्वीकार करना—चाहिये, और अपने कर्म-भोग को खुशी खुशी से भोगना चाहिये। ड्रामा में जो होता है वह अच्छा होता है। आँखों में दर्द भी था, दिखाई भी नहीं देता था फिर भी उसके आग्रह पर अपने स्कूटर के पीछे बिठाकर सेन्टर ले जाता था, योग करते थे मुरली सुनते और दोनों साथ साथ घर वापस आ जाते। दवा भी चलती रही, डाक्टर ने कहा—पचास परसेंट आँख ठीक होने की आशा है। पचास परसेंट निराशा है। **लेकिन मेरी लौकिक पत्नी को पूर्ण विश्वास था कि आँखें अवश्य ठीक हो जायेंगी। सेन्टर की इन्चार्ज आदरणीया बहन ने समझाया कि योग करने से दर्द कम महसूस होगा। और सचमुच उसे ऐसा लगा कि योग से दर्द कम महसूस हो रहा है। और परमपिता परमात्मा शिव की ऐसी कृपा हुई कि करीब करीब उसकी आँख ठीक हो गयी, दर्द जाता रहा, रोशनी वापस आ गयी और हम दोनों को प्रभु लगन ऐसी लगी कि अब छूटने की नहीं।**

यह समझ में और निश्चित रूप से बैठ गया कि ड्रामा में जो होता है अच्छा होता है। हम सभी का पारलौकिक बाप एक ही है, जिसे याद करने से सब विकर्म, पाप नष्ट हो जायेंगे। ★

नाटक

जब मैं कृष्ण बना !

लेखक
(ब्र० कु० व्ही० जे० वराड पाँडे
चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट
बिलासपुर म० प्र०)

पात्र :

(१) किशन लाल—आधुनिक कृष्ण की भूमिका करने वाला, उम्र १२ वर्ष ।

(२) भागवत प्रसाद—किशन लाल का बाप, उम्र ५५ वर्ष ।

(३) फूलमति—भागवत प्रसाद की एक पड़ोसन, उम्र २५ वर्ष ।

(४) फूलमति का पति—उम्र ३५ वर्ष ।

(५) जशोदा बाई—किशन लाल की माँ, उम्र ४० वर्ष ।

(६) शास्त्री जी—एक धर्म प्रेमी व्यक्ति, उम्र ५५ वर्ष ।

(७) कथा वाचक पंडित जी—उम्र ६० वर्ष ।

दृश्य पहला

भागवत प्रसाद के मकान में पंडित जी भागवत पढ़कर सुना रहे हैं और सामने श्रोतागण बैठे हैं जिनमें भागवत प्रसाद, उनकी पत्नी तथा उनका लड़का किशनलाल भी बैठा है। पंडित जी कृष्ण चरित्र पढ़ रहे हैं और सुनकर श्रोतागण 'सत्य वचन महाराज' कहकर दाद दे रहे हैं। और किशन लाल विचार मग्न बैठा हुआ है उसके मन में ये विचार, उठते हैं :—

क्या मैं भगवान कृष्ण नहीं बन सकता ? उसके मन ने उत्तर दिया हां, क्यों नहीं बन सकता। भागवत में सुना था कि नन्द जी के यहाँ ९ लाख गायें थीं। घी दूध की कोई कमी नहीं थी, लेकिन फिर भी भगवान कृष्ण को गोपियों के यहां जाकर चोरी-चोरी मक्खन खाने में बड़ा आनन्द आता था। मैं भी मक्खन चुराऊँगा।

दृश्य दूसरा

फूलमति का घर—फूलमति मट्ठा बिलोकर मक्खन अपने रसोई घर में रखती है। मक्खन हन्डी में रखा हुआ रहता है। फूलमति कपड़े धोने के लिये नहान घर में चली जाती है दरवाज़ा बन्द रहता है। इतने में किशन लाल उसके घर के रसोई घर में प्रवेश करता है। हन्डी मटकी फोड़ देता है और मक्खन खाने लगता है। इतने में फूलमति नहान घर से बाहर निकलकर रसोई घर में जाती है। उसे हन्डी मटकी फूटी हुई और मक्खन गायब दीखता है और मट्ठा बिखरा हुआ दीखता है, किशन कोने में छिपा रहता है। वह जोर से चिल्लाती है तो किशन लाल डर जाता है। फूलमति चिल्लाती है—कौन हरामखोर मक्खन खा गया। अच्छा, तू किशन लाल है। अब समझ गई, क्यों रे हराम खोर तेरे यहां मक्खन खाने को नहीं मिलता जो चोरी करने घुसा है। शरम नहीं आती तुझे, तेरा बाप तो बड़ा धर्मात्मा है और तू चोरी करता है।

किशन लाल :—अरे गोपी, इतनी क्यों बिगड़ती हो, मैं तो तेरा कृष्ण हूं। कृष्ण कन्हैया हूं।

फूलमति—ठहर जा गोपी के बच्चे, अभी चलकर तेरी मां को बताती हूं। (फूलमति किशन लाल को खींचकर उसके माँ के पास ले जाती है किन्तु किशन लाल घबराता नहीं है क्योंकि वह जानता है कि भगवान कृष्ण के साथ भी गोपियां इसी तरह बनावटी रोष प्रकट किया करती थीं और पकड़कर उसकी मां के पास ले जाया करती थीं)।

तीसरा दृश्य

जशोदा बाई—(उसका मुँह क्रोध से लाल दिखाई देता है)।

फूलमति जशोदा से बोलती है—देखा, जशोदा माँ तुम्हारे छोकरे की शैतानी। उसने मेरा कितना नुकसान किया, मेरे यहाँ का मक्खन खा डाला और चोरी कर लिया। मैं अभी जाकर पुलिस में रिपोर्ट करती हूं।

जशोदा बाई—(क्रोधित होकर किशन लाल से कहती है) क्यों रे हराम खोर, तुझे शरम नहीं आती। अपने खानदान के नाम पर बट्टा लगा रहा है। (ऐसा कहकर उसे एक तमाचा मारती है)।

किशन लाल—ललकारते हुए कहता है—अरे तुम कैसी माँ हो, यशोदा जी इन बातों पर कृष्ण जी की बलैया लेती थी, उससे लाड़ किया करती थी और तुम तो मारती हो।

जशोदा बाई—ठहर जा, लाड़ तो तेरे पिताजी करेंगे, अभी उनको बुलाकर लाती हूं। (अजी सुनते हो तुम्हारे लाडले बेटे की करामात, चोरी करता है और कहता है मैं कृष्ण हूं।) हल्ला सुनकर भागवत प्रसाद वहाँ आते हैं उनका चेहरा भी क्रोध से लाल हो जाता है और वे किशन लाल से पूछते हैं—क्यों बरखुदरदार क्या सुन रहा हूं, तूने मक्खन चोरी की। नालायक, चोरी की आदत तूने कब से सीखी। अगर तुझे मक्खन खाना था तो हमसे कहता, हम क्या मर गये थे ?

किशन लाल—(साहस बटोर कर धीरे से कहता है—भगवान कृष्ण भी तो चोरी करते थे।

भागवत प्रसाद :—अरे गधे, तू क्या भगवान कृष्ण बनेगा। सूरत तो देख अपनी, खबरदार आइन्दा चोरी की तो, खाल उधेड़कर रख दूंगा, समझा। भागवत प्रसाद किशन को २-४ थप्पड़ मारता है और फूलमति को बोलता है—बेटी फूलमति, मेरे बच्चे के किए पर मुझे बड़ा अफसोस है ये लो तुम्हारे मक्खन के पैसे। (फूलमति पैसे लेकर चली आती है, भागवत प्रसाद और जशोदा भी अपने अपने कमरे में चले जाते हैं।) किशन लाल अपने घर के आंगन में आकर मन ही मन सोचता है—अरे ये कैसे मां बाप और कैसी पड़ोसन है, इनमें तो भागवत के पात्रों जैसी कोई धार्मिक भावना ही नहीं है ! हो सकता है मेरा ही ग्रह का उल्टा फेरा होगा। अब कोई दूसरी लीला करके देखी जाये।

चौथा दृश्य

हमारे यहां पण्डित जी भागवत पढ़कर सुनाया करते थे कि जब गोपियाँ यमुना में स्नान करने लगतीं तो भगवान कृष्ण चुपचाप चोर की भांति वहां पहुँचकर उनके वस्त्र उठा ले जाते थे। यह लीला अच्छी रहेगी। लेकिन मौहल्ले में तो कोई नदी और तालाब नहीं है ? खैर नहान घर में तो स्त्रियाँ नहाती ही हैं वहीं जाकर प्रयोग कर लिया जाये !

किशन लाल ऐसा सोचता रहता है इतने में जशोदा बाई ने आवाज—अरे किशन, इधर आ तो।

किशन :—क्या है माँ ?

जशोदा बाई—अरे जा तो जरा पड़ोस फूलमति के यहां से पूछकर आना घड़ी में कितना बजा है, अपने यहां की घड़ी बन्द पड़ी है। किशन लाल फूलमति के यहाँ जाता है—

पाँचवां दृश्य

फूलमती का घर—घर के गुसलखाना की किवाड़ बन्द रहते हैं और गुसलखाने में फूलमती नहा रही थी और गुसलखाने की दीवार के ऊपर साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट और टावेल रखा रहता है।

किशन लाल दबे पांव वहां जाता है और वे चारों कपड़े दीवार पर से उठाकर जीने पर चढ़ जाता है। मन में वह सोचता है कि कृष्ण तो कदम्ब वृक्ष पर चढ़े थे परन्तु यहां कदम्ब वृक्ष नहीं है इसलिए जीने पर ही चढ़ा जावे।

फूलमती—(कपड़े गायब देखकर) चिल्लाती है। हाय हाय अभी यहां जो कपड़े थे वे कौन सूअर का बच्चा ले गया। कपड़े कल ही नये बनवाये थे।

अब कैसे करूं? फिर चिल्लाकर बोलती है—अजी सुनते हो, यहां के कपड़े आप उठाकर तो नहीं ले गए। (इतने में फूलमती का पति वहां आता है और बोलता है) अरी भगवान; मैं ऐसा भद्दा मजाक क्यों करने चला? कपड़े कौन ले गया होगा? मैं देखता हूं। इतने में पलटकर उसने जीने की तरफ देखा तो वहां किशन लाल कपड़े लेकर खड़ा हुआ दिखा और क्रुद्ध होकर उसने बोला। अरे गधे, यह क्या दिल्लगी है? फेंक नीचे कपड़े। तू कौन पड़ौस का किशनलाल है? यह क्या मजाक कर रहा है?

फूलमती—अच्छा! यह वही किशनलाल है जिसने कृष्ण बनकर पहले भी मक्खन चुराया था। इसे तो अब पकड़कर पुलिस में ले जाना चाहिए।

किशनलाल—अरे गोपी, मैं हूं तेरा कृष्ण कन्हैया, यह रहे कपड़े, पर कब तक नहीं मिलेंगे जब तक हाथ नहीं जोड़ लोगी। (वह फूलमती के पति की ओर देखकर कहता है) तुम यहां से चले जाओ जी, हमें अपनी गोपी से बात करने दो।

फूलमती का पति—(क्रोधित होकर बोलता है) ठहर जा कृष्ण कन्हैया के बच्चे, तुझे अभी बताता हूं। तेरे ही हाथ जुड़वाता हूं। (वह हाथ में एक छड़ी लेकर जीने की ओर लपकता है तो किशनलाल भागने लगता है और भागते भागते बोलता है) भगवान कृष्ण के साथ अगर कोई इस तरह का बर्ताव करता तो उन्हें कितना कष्ट पहुंचता। ऐसा कह कर वह कपड़े फेंक देता है और दौड़कर अपने घर में चला जाता है और पढ़ने बैठ जाता है।

(किशनलाल पढ़ते पढ़ते सोचता है)—यह प्रयोग भी फेल हो गया। अब कोई दूसरा प्रयोग किया जावे। भागवत में तो लिखा है कि एक दिन भगवान कृष्ण ने कालिया दमन किया था जिसके विष से यमुना का सारा पानी नीला हो गया था तो यही प्रयोग किया जावे। इससे किसी पड़ोसी का नुकसान नहीं होगा और पिता जी की भी मार नहीं पड़ेगी। परन्तु कालिया कहां से लाया जावे। ऐसे कालिया तो आज कल होते नहीं हैं। (सिर खुजाता है और एकदम से उसका मुँह खिल उठता है, चुटकी लिए बोलता है) हां, याद आया। मोहल्ले के शास्त्री जी सांपों को बुलाकर दूध पिलाते हैं इसलिए सांप उनके यहां घूमते रहते हैं, वहीं चला जावे और सांप को पकड़ा जावे।) इतने में उसके पिता भागवत प्रसाद आवाज़ देते हैं) अरे किशन लाल, जरा शास्त्री जी के यहां जाकर रामायण तो ले आना।

किशन लाल—अभी लाया पिता जी। (वह दौड़ते हुए शास्त्री जी के यहां जाता है।)

छठा दृश्य

(शास्त्री जी के घर के आंगन में एक सांप दिखाई देता है जो करीब २-३ फुट का होता है, उसे देखकर किशनलाल पहले थोड़ा डर जाता है और सहमकर पीछे ही रुक जाता है, फिर सोचता है कि भगवान कृष्ण ने तो कालिया का मर्दन किया था, मैं सांप से क्यों डरूं। फिर वह आवाज लगाता है) शास्त्री जी, शास्त्री जी, कुछ गूं गूं की आवाज एक तरफ से सुनाई पड़ती है सामने ही दूध का कटोरा बिखरा पड़ा था। दूध को सांप चाट गया था। शास्त्री जी एक खाट के पीछे दुबके बैठे थे और उनकी पत्नी चक्की के ऊपर चढ़ गई थी और हाथ हिलाकर कह रही थी) दूर रहना, बड़ा जहरीला है, काट लेगा लेकिन किशनलाल झपटकर उस सांप का मुँह पकड़ लेता है और आंख मींचकर घर से बाहर निकलता है। शास्त्री जी चिल्लाते हैं, अरे मूर्ख यह क्या करता है, बच्चों का खेल नहीं है, छोड़ दे नहीं तो काट खायेगा। ऐसा कहते कहते वे भी बाहर निकल गये। वे किशनलाल के पीछे पीछे जाते हैं।

किशनलाल—(रुक कर बोलता है) शास्त्रीजी, मैं तो कृष्ण हूं, इस सर्प का मर्दन करूंगा और फिर भागने लगता है और शास्त्री जी चिल्लाते रहते हैं। मोहल्ले के लोग इकट्ठा हो जाते हैं। इतने में किशन लाल के पिता भी वहां पहुंचते हैं।

भागवत प्रसाद :—अरे छोड़ दे कृष्ण के बच्चे, क्या हमारे वंश को निर्वंश करेगा, छोड़ दे नहीं तो तेरा ही मर्दन करूंगा। इतने में किशन की मां भी आ जाती है और रोना पीटना आरंभ कर देती है।

किशनलाल मन ही मन सोचता है जब भगवान कृष्ण ने यमुना में डुबकी लगाई होगी तो क्या सब ऐसे ही रोये चिल्लाये होंगे ? फिर वह सोचता है कि अब मेरा काम तो पूरा हो गया है। वह सांप को छोड़ देता है फिर लोगों ने सांप को मार डाला और भागवत प्रसाद को समझाये कि कृष्ण का भूत किशन लाल के दिमाग से उतारने के लिए उसे मारने पीटने की जरूरत नहीं है। इसलिए भागवत प्रसाद किशन लाल को समझाते हैं, देख बेटा, कृष्ण जी की बात अलग थी, तेरी बात अलग है।

किशन लाल—पूछता है, मुझमें और कृष्ण में क्या अन्तर है ? क्या मैं कृष्ण नहीं बन सकता ? कृष्ण बनने के लिए मुझे क्या करना पड़ेगा ?

भागवत प्रसाद—अरे बेटा, कृष्ण तो भगवान के अवतार थे और तू तो मनुष्य है।

किशन लाल—तो क्या पिता जी, भगवान चोरी कर सकते हैं ? किसी स्त्री की मर्यादा भंग कर सकते हैं ? जानवरों की हिंसा कर सकते हैं ? सांप मारने के लिए क्या भगवान का अवतार ही होना जरूरी है ? क्या कालिया यह जानता था कि कृष्ण भगवान् हैं ? इन सब प्रश्नों का मुझे युक्ति-युक्त जवाब चाहिए ?

भागवत प्रसाद—बेटा, यह सब बातें तो मेरी भी समझ के बाहर हैं, मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि कृष्ण भगवान के अवतार थे इसलिए वह सब कुछ कर सकते थे।

किशन लाल—नहीं पिता जी, यह बात मुझे जंचती नहीं है। मुझे तो इन सब बातों का रहस्य समझना ही होगा।

(पिता-पुत्र का जब यह संवाद चल रहा था तो एक ब्रह्माकुमारी बहिन उस संवाद को सुन रही थी और हँस रही थी। किशन लाल की जिज्ञासा को देखकर वह उसके पास पहुंची और बोली)—

भाई, मैं तुझे इन सब बातों का रहस्य समझाऊंगी।

भागवत प्रसाद—क्या बहिन जी आप इन सब बातों का रहस्य जानती हैं ? मैं भी सुनना चाहूंगा।

ब्रह्मा कुमारी—आप परमात्मा शिव का ज्ञान लेने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में कल आ जाइये तो मैं तुम्हें सारा ईश्वरीय ज्ञान समझाऊंगी।

किशन लाल और भागवत प्रसाद—दोनों कहते हैं। हम जरूर आयेंगे और सुनेंगे।

दृश्य सातवां

(दोनों सेवा केन्द्र में जाते हैं और ज्ञान सुनते हैं और फिर खुश होते हुए अपने घर चले जाते हैं) किशन लाल रास्ते चलते हुए भागवत प्रसाद से बोलता है। पिता जी अब सब बातें समझ में आई। कृष्ण कौन थे, उनका बनाने वाला कौन था यह समझ में आया। कृष्ण सरीखे देवता बनने के लिए क्या करना होगा। यह भी समझ में आया और यह भी मालूम हुआ कि कृष्ण न तो चोर था, न उसने स्त्रियों की मर्यादा भंग की थी और न कालिया का दमन किया था किन्तु वास्तविक रहस्यों को न बताते हुए शास्त्रों में कृष्ण की ग्लानि कर दी गई है। कृष्ण तो सतयुग के प्रिन्स थे और सुख सम्पन्नता से भरपूर थे। वे तो सोलह कला संपूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, निर्विकारी देवता वर्ण के थे। उन्होंने सतयुग से पूर्व कलियुग अन्त में संगम युग पर विकारों पर पूर्ण विजय प्राप्त करके सतयुगी सृष्टि (स्वर्ग रूपी मक्खन) को प्राप्त किया। विकारों रूपी नागों को नथने के लिए स्वयं भी सम्पूर्ण देही-अभिमानी अर्थात् शरीर रूपी वस्त्रों को भुलाया और ब्रह्मा रूप में सर्व को शरीर रूपी वस्त्रों को भूलने की शिक्षा दी। उन्होंने अमर्यादायुक्त कुछ नहीं किया। इस

(शेष पृष्ठ १२ पर)

'ईश्वरीय खुशी–जीवन का श्रृंगार'

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

जिस जंगल में हरियाली न हो वो जंगल किस काम का, जिस पेड़ पर फूल-फल न हों वो पेड़ किस काम का, जिस बगीचे में फूलों की बहार न हो वो बगीचा किस काम का, जिस मन्दिर में मूर्ति न हो वो मन्दिर किस काम का, ऐसे ही जिस मन-मन्दिर में खुशी रूपी दीपक जलता न हो, गम रूपी अन्धकार ही अन्धकार हो वो मन किस काम का। सचमुच धन्य हैं वो महान आत्माएं जिन्होंने परमात्मा से अविनाशी खुशी के अखुट खज़ाने से स्वयं को भरपूर किया और बेगमपूर के बादशाह बनाया।

अपार खुशी

जब हम परमपिता शिव के बन जाते हैं तो गम जड़ से खत्म होकर अपार खुशी प्राप्त होती हैं। जन्म-जन्मान्तर व्यक्ति वैभवों से हद की खुशी प्राप्त होती रही। लेकिन मझदार में डूबती हुई जीवन रूपी नैया को परमात्मा खिवैया भवसागर से पार लगाकर सर्व खज़ाने वरदान के रूप में प्रदान करता है तो अपार खुशी से मन नाचने लगता है। आत्मा इस देह और देह की दुनिया की सुध-बुध खोकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती रहती है।

स्थायी खुशी

योगी, राजयोग के अभ्यास से सर्वशक्तिवान परमात्मा से सर्व शक्तियाँ पाकर स्वयं को शक्ति-शाली बनाता है। परिणामतः वह स्थाई खुशी जिसे माया कभी भी खत्म नहीं कर सकती, अनुभव करता है। इसके विपरीत भोगी भौतिक साधनों से अल्पकालोन खुशी प्राप्त करता है। किसी भी प्रकार की समस्या या विघ्न रूप से माया उसकी खुशी का दीपक बुझाकर उदासी तथा मायसी रूपी अन्धकार में खड़ा कर देती है।

जो बनेगा परवाना, वही पायेगा खुशी का खज़ाना

परमात्मा रूपी शमा पर जो आत्मा रूपी परवाने फिदा होते हैं अर्थात् बलिहार जाते हैं वही उसकी मधुर स्मति में खोकर स्वयं को शान्ति के सागर परमात्मा की शीतल छत्रछाया में पाते हैं और वही आत्माएं सर्व गुणों का तथा शक्तियों का भण्डार शिव बाबा से सर्व खजाने पाकर स्वयं को भरपूर करते हैं। फलस्वरूप उन्हें खुशी का अखुट खज़ाना प्राप्त होता है।

अन्तर्मुखता खुशी के खज़ाने की खान है

अन्तर्मुखता की गुफ़ा में बैठकर योगी आत्मिक स्वरूप का अभ्यास सहज अनुभव करके सदा शान्ति के स्वधर्म में टिक जाता है। उस शान्त मन में ही शान्ति के सागर शिव बाबा की मधुर स्मृति निवास करती है। योगी सदा अथाह खुशी के खज़ानों को पाकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलता रहता है। उसके चेहरे पर खुशी की अविनाशी झलक और फलक छा जाती है।

खुशनुमा चेहरा, बेहद सेवा का साधन

सन 1976 में मधुबन में आये हुए सेवाधारियों से अव्यक्त बाप दादा ने मुलाकात करते समय एक प्रश्न पूछा कि हर सेकंड त्रिगुण सेवा (Triple Service) कैसे कर सकते ? जिसका जवाब बाबा ने दिया—

★ एक तो कर्मणा सेवा

★ दूसरा मनसा द्वारा योग के दान करने की सेवा

★ तीसरा अपने खुशनुमा चेहरे द्वारा खुशी का दान करने की सेवा। जब किसी उदास आत्मा की दृष्टि खुशनुमा चेहरे पर पड़ती तो उसके मन की मुरझाई हुई कली खिल जाती है। फलस्वरूप

वह आत्मा उमंग, उल्लास के पंख पाकर परमधाम की ओर ऊपर उड़ने में सफलता प्राप्त करती और अथाह शक्तियों तथा खुशी के खज़ाने से भरपूर हो जाती है। अर्थात् खुशनुमा चेहरे द्वारा हम दूसरों को शिव बाबा की याद दिलाने की प्रेरणा दे सकते हैं।

खुशनुमा चेहरा, प्रभाव डालता गहरा

खुशनुमा चेहरा चुम्बक का काम करता है। न चाहते भी अनेक आत्माएं खुशमुमा चेहरे की तरफ आकर्षित हो जाती हैं। इसका ज्वलन्त उदाहरण है—

सन् 1977 में प्रकाशमणी दादी जी विश्व भ्रमण (World tour) कर रही थीं। इसके अन्तर्गत लण्दन में ईश्वरीय सेवार्थ 3-4 दिन रहना हुआ। एक दिन की बात है दादी जी सवेरे से रात्री तक एक के पीछे एक लगातार विभिन्न प्रोग्राम के निमंत्रण पर गईं। साथ में एक अखबार का संपादक (Editor) भी जाता था जो कि दादी जी की हर एक बात पर विशेष ध्यान रखता था। रात्री को प्रवचन का प्रोग्राम पूरा होने के पश्चात् विदाई लेते समय पत्रकार ने दादी जी से कहा—क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ ?

दादी जी ने कहा—भले पूछिए।

संपादक ने पूछा कि—आप सवेरे से रात्री तक इतना व्यस्त होने पर भी मैंने आपके चेहरे पर थकावट का चिन्ह नहीं देखा, इसका कारण क्या ?

दादी जी ने जवाब दिया—This is magic of Rajyoga.

इस जवाब को सुनकर पत्रकार बहुत प्रभावित हुआ और उसने तुरन्त राजयोग सीखने की इच्छा प्रकट की। पश्चात् उसने राजयोग का अभ्यास किया और वह अभी भी ईश्वरीय सेवा में मददगार है।

भला आप सोचिए दादी प्रकाशमणी जी जो सदा प्रकाशमय ज्योति - बिन्दु स्वरूप में स्थित रहकर उस परम ज्योति - बिन्दु शिव बाबा की याद में खोई रहकर अथक ईश्वरीय सेवा में व्यस्त रहतीं, क्या उन्हें थकावट हो सकती है ? शिव बाबा ने उन्हें अथक सेवाधारी का वरदान ही प्रदान किया है।

जितना समय होगी खुशी, उतना समय लगी रहेगी फांसी—

शिव बाबा बार-बार ब्रह्मा वत्सों को कहते हैं—मीठे बच्चे, अपनी बुद्धि को सदा परमधाम में मेरी याद में खोकर उल्टा लटकाकर रक्खो अर्थात् सदा फांसी पर लटके रहो। लेकिन ये तभी हो सकता है जब आत्मा अपार खुशी में रहती। क्योंकि खुशी में रहने से बुद्धि रूपी पैर इस जहान से ऊपर उठाकर परमधाम की ओर आत्मा, परमात्मा से मधुर मिलन मनाने अग्रसर होती है। इसलिए निरन्तर योगी बनना है अर्थात् सदा याद की फांसी पर लटके रहना है तो निरन्तर खुशी में रहना भी परमावश्यक है।

जहाँ होगी खशी अपार, वहां न करेगी माया वार—

माया दुश्मन पर वार तब करती है जब आत्मा का खुशी रूपी दीपक बुझा हुआ होता है। मन में ग़म रूपी अन्धकार छा जाता है। माया अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी सैनिकों को विभिन्न रूप में भेजकर आत्मा के सर्व खज़ाने लुटाती है। परिणामतः आत्मा कमज़ोर और कंगाल बनती है। लेकिन जो आत्माएँ अपार खुशी में रहतीं हैं। उन्हों पर वार करने की हिम्मत नहीं करती और दूर से ही नमस्कार करने लगती है।

जब खुशी गुम हो जाती—

★ मन की कली मुरझाती—

जब खुशी गुम हो जाती है तो ग़म रूपी कीड़ा वार करता है जिससे उदासी, निराशा, सुस्ती, अलबेलापन आदि सूक्ष्म बीमारियाँ आत्मा को लगकर मन रूपी कली मुरझाती और जब मन उदास होगा तो चेहरे पर उदासी छा जाती है। क्योंकि कहावत भी है—Face is the index of mind.

★ सेवा करने की रुचि खत्म हो जाती—

जब खशी गुम हो जाती है तो मन ईश्वरीय सेवा करने में रुचि नहीं लेता। कई प्रकार के बहाने बनाकर सेवा से मुख मोड़ लेते। सारे कल्प में एक ही बार संगम युग में भविष्य प्रालब्ध बनाने

के सुअवसर को गँवाकर सदा के लिए तकदीर को लकीर लगाते हैं और तकदीर की तस्वीर बिगाड़ देते हैं।

★ ईश्वरीय जीवन असार अनुभव होता—

खुशी गुम होने से उदास मन में उस प्रियतम शिव पिता की स्मृति निवास नहीं कर सकती है। परिणामस्वरूप योग द्वारा जो अनुपम अनुभूतियां तथा प्राप्तियाँ होती हैं उससे वंचित रहकर स्वयं को खोखला अनुभव करती है। ईश्वरीय जीवन में सुख-शान्ति आनन्द रूपी बहार न होने से, जीवन असार अनुभव होता है, और आत्मा पुनः दुखी अशान्त विकारी जीवन स्वीकार करती है।

किसी की खुशी गुम करना भी हिंसा है—

खुशी आत्मा की जान है। अगर हम किसी भी कारण कोई आत्मा की खुशी गुम करने के निमित्त बनते तो वह आत्मा बेजान बन जाती। उस निराश, कमजोर तथा पुरुषार्थहीन आत्मा के मन से हमारे प्रति बद दुवाएँ निकलती हैं, वह हमें भी आगे बढ़ने में रुकावट डालती है। परिणामतः दोनों का ही नुकसान होता है। किसी की आत्मा की खुशी गुम करने से सूक्ष्म पापों का बोझ बढ़ता है।

सदा खुशी में कैसे रहें—

★ खुशी रूपी मक्खन विचार सागर मंथन से प्राप्त होता है। जिससे आत्मा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करती। ज्ञान के बहुत हथियार हमारे पास होंगे, जिससे हम माया के भिन्न-भिन्न वारों को सहज ही काट सकेंगे।

★ सदा खुशी में रहने के लिए सदा ये याद रक्खो कि हम किसी भी श्रीमत का उल्लंघन न करें या हमसे कोई विकर्म न हो जाए, नहीं तो खुशी गुम हो जाएगी।

★ अगर हमने किसी का अवगुण देखा तो खुशी गायब। इसलिए अवगुण दूसरों के और चिन्ता हम क्यों करें। हमें क्या पड़ी है दूसरों का बोझ उठाने की।

★ खुशी गुम उनकी होती है जो बहुत सीमित विचारों वाले व्यक्ति होते हैं। अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाओ। "किसी ने कुछ कहा और हमारी खुशी समाप्त"—ऐसे छुई-मुई का पेड़ न बनो। अडोल बनो कि कोई भी हमारी खुशी गुम नहीं कर सकता। कोई भी चोर हमारे इस खज़ाने को छीन नहीं सकता।

★ सदा अपनी वर्तमान और भविष्य की प्राप्तियों की स्मृति में रहो। हमें भगवान मिल गए और उसने हमें अथाह खज़ाना दिया, उस खजाने को बार-बार देखो। और भाग्यविधाता के गुण गाते रहो तो कभी भी ग़मी नहीं आएगी।

★ कभी भी अपने को अकेला नहीं देखो। बाबा सदा का साथी है। अकेलेपन की महसूससता ही मन में उदासी लाती और खुशी गुम हो जाती है।

★ हर बात में ज़िम्मेदारी हमारे सर्वशक्तिवान बाबा की है। हम तो केवल निमित्त हैं। ऐसा समझने से सदा निश्चिन्त रहेंगे। खुशी कभी भी कम नहीं होगी। हम तो हैं ही बेगमपुर के बादशाह।

☐ अमृत वेले स्वयं को इतना खुशी का डोज़ (dose) दे दो जो वह सारे दिन चले। अगर सवेरे आत्मा को खुशी से भरपूर न किया तो दिन में आने वाले विघ्न आत्मा को अवश्य ही हिला देंगे।

☐ अपने को विघ्न विनाशक और योद्धा समझो तो माया से युद्ध में आनन्द आयेगा, निराशा नहीं होगी।

☐ स्वयं से और बाबा से रूह-रिहान करना सीखो। जब कोई भी समस्या या विघ्न आये तो चले जाओ बाबा के पास तो आत्मा सदा हर्षित रहेगी कभी भी खुशी गुम न होगी।

पारस्परिक सम्बन्ध का वास्तविक ज्ञान न होने से ही विश्व में अशान्ति है

ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, इस मास १० तारीख से आबू पर्वत पर जो विश्व शान्ति सम्मेलन होने जा रहा है, उसके बारे में सोचते हुए मन के सामने कुछ ऐसे दृश्य उपस्थित हो जाते हैं जिनसे मालूम होता है कि शान्ति के लिए वास्तविक परिचय का होना और परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान होना ज़रूरी है। इस विषय में दो वास्तविक घटनाएँ इस समय मेरे सामने आ रही हैं।

एक घटना तो एक ससुर और बहू से सम्बन्धित है। एक बार का किस्सा है कि एक नव-विवाहित वर और वधु गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। रास्ते में वर का नगर आता था। वहां से उसके पिता ने भी उनके साथ ही शामिल होकर आगे की यात्रा करनी थी। जब गाड़ी उस स्टेशन पर आई तो वर का पिता भी वहाँ प्लेटफार्म पर पहुंचा हुआ था। गाड़ी के रुकते ही वर तो सुराही लेकर पानी भरने चला गया। उसका पिता उस डिब्बे को ढूंढ़ रहा था जहां उसका बेटा और उसकी बहू बैठे थे। उसे बेटा तो दिखाई दिया नहीं परन्तु चूंकि गाड़ी चलने का समय नज़दीक आता जा रहा था, इसलिये उसने एक डिब्बे में घुसपैठ करने की कोशिश की। परन्तु उसी डिब्बे में ही उसकी बहू भी बैठी थी जोकि अपने ससुर को पहचानती नहीं थी। बूढ़ा भी बहू को नहीं पहचानता था क्योंकि बहू उसकी उपस्थिति में घूंघट करती थी। पहचान न होने के कारण बहू ने उस वृद्ध व्यक्ति को अन्दर प्रवेश नहीं करने दिया। डिब्बे के भीतर से दरवाज़े की चिटखनी बन्द करते हुए वह कड़क कर बोली—"यह बूढ़ा घुसता चला आता है; इसे दीखता नहीं है कि यहां पहले ही जगह नहीं है, जा दूसरे डिब्बे में कहीं घुस जा।" बूढ़ा भी उस नारी की कटु भाषा सुनकर अशान्त हुआ। वह बोला—"मालूम नहीं, यह किस मूर्ख की बहू है; यह तो बोलना ही नहीं जानती।" इस प्रकार कहा-सुनी हो रही थी कि इतने में बेटा (वर) पानी की सुराही भर कर आ पहुंचा। अपने पिता को देख कर वह उनके सामने झुका और उसने नमस्कार किया और झगड़ा देख कर दुःखी भी हुआ और शर्मिन्दा भी। उसने अपनी पत्नी से कहा—"जानती नहीं हो यह मेरे पिताजी, अर्थात तुम्हारे ससुर साहब हैं···। ओहो, तुमने इन्हें बैठने के लिए न कर दी! यह तो बहुत पाप कर दिया है···"

तब बेटे ने पिता से क्षमा मांगी और उस बहू ने भी पश्चात्ताप प्रगट किया। वृद्ध महोदय भीतर बैठ गये; अब उनके लिये जगह भी बन गयी थी। वह झगड़ा भी निपट गया तथा अब शान्ति, सम्मान और प्रेम की बातें होने लगीं क्योंकि अब सम्बन्धों का ज्ञान हो गया था।

इसी तरह का एक दूसरा किस्सा महात्मा गांधी से सम्बन्धित है। जिन दिनों देश की स्वतन्त्रता का

संग्राम चल रहा था, उन दिनों वे एक बार गाड़ी में कहीं जा रहे थे। वे रास्ते में कुछ नींद-सी महसूस करने लगे। वह जहां बैठे थे, वहीं पर थोड़ा पसर गये। नींद के कारण अनजाने उनका पाँव पास में बैठे एक किसान को स्पर्श कर गया। उस किसान ने क्रोध में आकर उनके पांव को उठा कर पटक दिया। गाँधी जी को थोड़ा धक्का-सा लगा और वे उठ बैठे तथा क्षमा मांगने लगे। परन्तु उस किसान ने तो ऊल जलूल न जाने क्या-क्या बोल दिया !

आगे चल कर एक स्टेशन आया। वहां उतरने के लिए गाँधी जी दरवाज़े की ओर बढ़े तो उन्हें देख कर उस दरवाज़े के सामने प्लेटफार्म पर भीड़ इकट्ठी हो गई और लोग आगे बढ़-बढ़ कर उनके गले में फूल मालाएं डालने लगे। यह सब देख कर वह किसान हैरान रह गया। दांतों तले अंगुली दबा कर वह अब पश्चात्ताप कर रहा था क्योंकि अब उसे मालूम हुआ कि जिसकी टांग उसने उठा कर पटकी थी, वह तो देश के प्रिय नेता महात्मा गाँधी थे जबकि उसने उन्हें किसान समझा था। गोया जान-पहचान न होने के कारण अथवा भ्रान्त परिचय होने के कारण ही वह दुःखी हुआ और उसने भद्दा कर्म किया।

इन दो वृत्तान्तों से हमें यह ज्ञान मिलता है कि अशान्ति और पाप-कर्मों का मूल कारण क्या है। यह भूल जाने के कारण इस जीवन रूपी यात्रा में दूसरे सभी यात्री आत्मिक नाते से हमारे भाई हैं अथवा आदि पिता ब्रह्मा के सम्बन्ध से हमारे सुहृद भाई-बहन हैं, मनुष्य उनसे अभद्र व्यवहार करता है जिससे उसका कर्म भी विकर्म बनता है और जीवन भी दुःखी तथा अशान्त होता है। परन्तु दूसरों को भाई न मानने की भूल का भी मूल तो पहले मनुष्य को अपने बारे में अज्ञानता है। वह स्वयं को एक आत्मा मानते तथा परमात्मा को अपना तथा अन्य सभी का परमपिता मानने की बजाय स्वयं को देह मानता है। स्वयं की सत्य पहचान न होने के कारण ही संसार में कलह-कलेश और अशान्ति है। यदि मनुष्य स्वरूप में स्थित हो और दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से देखे तो विश्व में भ्रातृत्व की भावना होगी और स्नेह होगा और इससे विश्व में शान्ति होगी क्योंकि आत्म-स्थिति रूपी उन्नति की सीढ़ी से मनुष्य निर्विकार और पवित्र होगा।

□

सिरसी में रोटरी कल्ब हाल में आध्यात्मिक समारोह में बाएँ चित्र में ब्र० कु० बलवन्त, गिरीश पटेल (प्रवचन करते हुए) मैजेस्ट्रेट पी० जी० नाडगोडा, ब्र० कु० गायत्री, बहन सूरज रानी तथा दाएँ चित्र में श्रोतागण ध्यानपूर्वक सुनते हुए।

आत्माओं ने लाभ उठाया।

कलकत्ता—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां से ६० 70 कि. मी. दूर मेमारी नामक स्थान पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग 6000 आत्माओं ने लाभ उठाया। पांच प्रोजैक्टर शो भी दिखाए गए तथा चार गांव में कलैंडर प्रदर्शनी द्वारा भी लगभग 3000 आत्माओं को शिवपिता का दिव्य संदेश दिया गया।

कटक—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि छबिया, बांकी तथा कंदरपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त जटनी में स्थानीय मुख्य व्यवसायी की क्रिया के अवसर पर भी ब्र० कु० बहिनों के प्रवचन हुए।

बीदर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि देगलूर में 'शांति प्रदायक पथ-प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त 6 योग शिविरों का भी आयोजन किया गया जिनसे लगभग 1600 आत्माएं लाभान्वित हुईं। कई स्थानों पर प्रोजैक्टर शो भी दिखाए गए, जिनके परिणामस्वरूप लगभग 150 आत्माएं प्रतिदिन ज्ञानस्नान करती हैं।

सिरसी—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर चार दिन के लिए 55वां अखिल भारतीय कन्नड़ साहित्व सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसमें एक स्टाल लेकर 'विश्व-शांति राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी' लगाई गई। देश-विदेश से लगभग 3000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मंडप के गेट पर 'स्वर्ग का द्वार' नामक वैनर लगाया गया था। प्रदर्शनी को लगभग 4000 आत्माओं ने देखा।

कालेज-स्क्वेयर—(कटक) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि 4 दिन के लिए जीवरा हाई स्कूल में विश्व-नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसको सामान्य जनता तथा गणमान्य व्यक्तियों ने देखकर अपने जीवन को नेक, शांतिमय लनाने की प्रेरणा ली। समाप्ति समारोह पर प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन का आयोजन किया गया।

नयागंज—(कानपुर) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि कुछ सरकारी अधिकारियों के अनुरोध पर गंगा-घाट कानपुर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आध्यात्मिक चरित्र उत्थान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें गंगा स्नान हेतु आई हुई ग्रामीण जनता तथा समीपवर्ती शहरी जनता ने इस प्रदर्शनी से लाभ उठाया। इसी प्रकार एक प्रदर्शनी विलग्राम जिला हरदोई में मन्सा बाबा के मंदिर व स्कूल में भी लगाई गई। इस प्रदर्शनी से भी हर वर्ग की लगभग 3000 आत्माओं ने लाभ उठाया।

खंडवा—सेवाकेन्द्र से ब्र. कु. हेमा लिखती हैं कि स्थानीय जेल में जेलर महोदय के निमंत्रण पर त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे लगभग 250 कैदियों ने लाभ उठाया। कई कैदियों ने अपनी बुराइयों को छोड़ने का संकल्प लिया।

उदयगीर—सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० भारती लिखती हैं कि गंगाखेड़ तालुका में 5 दिन के लिए विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग 5000 आत्माओं को लाभ मिला। साथ-साथ राजयोग शिविर से भी लगभग 300 आत्माओं ने अनुभव प्राप्त किया। महाती पुर, पालम, इशाद, राणीसावर गांव के लोगों ने भी प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

मुरादाबाद—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि कम्पनी बाग में जनता द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में स्टाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे लगभग 2500 आत्माओं ने लाभ उठाया। दूसरी प्रदर्शनी रामनगर में लगाई गई।

हल्द्वानी—सेवाकेन्द्र की ओर से रुद्रपुर नगर में त्रिदिवसीय मानव उत्थान चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन नगर के पुलिस अधीक्षक जी ने किया लगभग 5000 आत्माओं ने यह प्रदर्शनी देखी और 150 आत्माओं ने कोर्स किया, जिसके परिणामस्वरूप वहां पर गीता पाठशाला खोल दी गई है।

मालेगाँव—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है ओसवाल श्वेताम्बर जैन संघ के निमंत्रण पर नांदगांव शहर में 5 दिन के लिग विश्व-शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिससे 6000 आत्माओं ने परमपिता का परिचय प्राप्त किया तथा 250 आत्माओं ने योगशिविर में भाग लिया।

नडियाड—सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० पूर्णिमा लिखती हैं कि महेजाब गांव, पिटलटा गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी

तथा राजयोग फिल्म के कार्यक्रम आयोजित किये गए,जिनसे लगभग 6000 आत्माएं लाभान्वित हुईं। साथ-साथ राजयोग शिविरों में भी लगभग 276 आत्माओं ने भाग लिया। रंगेपुर गांव में राजयोग द्वारा लगभग 250 आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया।

सिरसा—सेवाकेन्द्र से ब्र० कु० शीला लिखती हैं कि यहां पर प्रैस-कान्फ्रैंस का आयोजन किया गया, जिनमें दो प्रैस-सम्पादकों तथा दो प्रैस-संवाददाताओं ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त अन्य कई विशिष्ट व्यक्ति भी उपस्थित हुए। कई प्रमुख व्यक्तियों के निवास स्थान पर जाकर ईश्वरीय संदेश दिया गया।

लखनऊ—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सेंट्रल जेल तथा आदर्श जेल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे लगभग 1000 कैदी भाइयों को ईश्वरीय संदेश मिला, सभी ने कोई न कोई बुराई छोड़ने का संकल्प लिया।

भोपाल—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि विश्व-शान्ति महासम्मेलन का संदेश देने हेतु मंत्री, सचिव, विभागाध्यक्ष, पत्रकार, केन्द्रीय व राज्य सरकार के अधिकारी न्यायाधीशों आदि लगभग ३५० विशिष्ट व्यक्तियों से संपर्क स्थापित किया गया जिनमें कुछ मंत्री व अधिकारी संग्रहालय देखने के लिए भी आए। रीवा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन रीवा के भूतपूर्व नरेश द्वारा कराया गया। रीवा में पत्रकार गोष्ठी, ग्वालियर तथा आगरा में डाक्टरवर्ग के लिए "मेडीटेशन एवं मेडिशियन" विषय पर विशेष कार्यक्रम तथा ग्वालियर में हाइकोर्ट बार एशोसिएशन में राजयोग द्वारा अपराध उन्मूलन विषय पर भाषण हुए। इसके अतिरिक्त ग्राम धूरपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा सागर में विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया।

बम्बई—(मुलुन्द) सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि भाण्डूप में एक भव्य विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन अतिरिक्त प्रशासिका दीदी मनमोहिनी जी द्वारा सम्पन्न हुआ। महिलाओं तथा व्यापारी वर्ग का सम्मेलन भी बुलाया गया। मेले द्वारा ६ स्कूलों के ७००० विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा कुल मिलाकर एक लाख पंद्रह हजार आत्माओं ने मेले को देखा और ५०० आत्माओं ने राजयोग शिविरों से आत्म अनुभूति व परमात्मानुभूति की।

पोरबंदर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि मानवीय-नियम तथा दैवी नियम" विषय पर सेवाकेन्द्र पर प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें मुख्य वक्ता आस्ट्रेलिया से पधारी बहिन मारगरेट, भ्राता जोय, दिल्ली से एडीशनल सेशन जज गुप्ता जी तथा एडीशनल सेशन जज, पोरबंदर थे। पोरबंदर की महारानी को सेवाकेन्द्र हर आमंत्रित किया गया तथा आधा घंटा बहिन मारगरेट तथा भ्राता जोय से राजयोग पर भेंट वार्ता हुई। इसके अतिरिक्त कन्याओं के गुरुकुल में तथा थियोसोफिकल सोसायटी में भी प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अमरावती—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि बडनेर गंमई तथा विदर्भ की पुरानी राजधानी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिनके द्वारा हजारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया तथा 350 आत्माओं ने योगशिविरों से अनुभव प्राप्त किए। प्रदर्शनी के साथ २ प्रोजैक्टर शो तथा नाटक, गीत आदि का कार्यक्रम रखा गया।

पटना—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ कि जलालपुर में विश्व शान्ति सम्मेलन की ओर से निमंत्रण मिलने पर तीन दिन तीन विषयों पर प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त जलालपुर, राजेन्द्रनगर तथा बोरिंग केनाल रोड में प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया।

ब्रह्मपुर—सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि खलीकोटा कालेज की हीरक जयन्ती के अवसर पर स्टेडियम ग्राउंड में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। भारत के उपराष्ट्रपति जी एवं उड़ीसा के कई मन्त्री तथा हर वर्ग के लोगों ने बड़ी रूचि पूर्वक प्रदर्शनी को देखा।

गोहाटी—सेवाकेन्द्र से ज्ञात हुआ है हिन्दी साप्ताहिक "रजनीगांधी" नामक पेपर के उद्घाटन कार्यक्रम में प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग २०-२५ आफिसर तथा अन्य काफी संख्या में लोग उपस्थित थे। साथ ही विश्व शान्ति सम्मेलन के लिए भी निमंत्रण दिया गया।

भुवनेश्वर—सेवाकेन्द्र की ओर से राजमहल के चौराहे पर विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसके द्वारा हजारों आत्माओं को शिव पिता का दिव्य संदेश दिया गया। कई आत्माओं ने राजयोग शिविर से भी लाभ उठाया।

□

सेवा समाचार
(चित्रों में)

गोधरा (गुजरात) में हुए विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए, गोधरा तालुका पंचायत के प्रमुख भ्राता केशव भाई पटेल। ब्र० कु० रत्न मोहिनी, सुरेखा बहन, राज बहन तथा अन्य साथ में खड़े हैं।

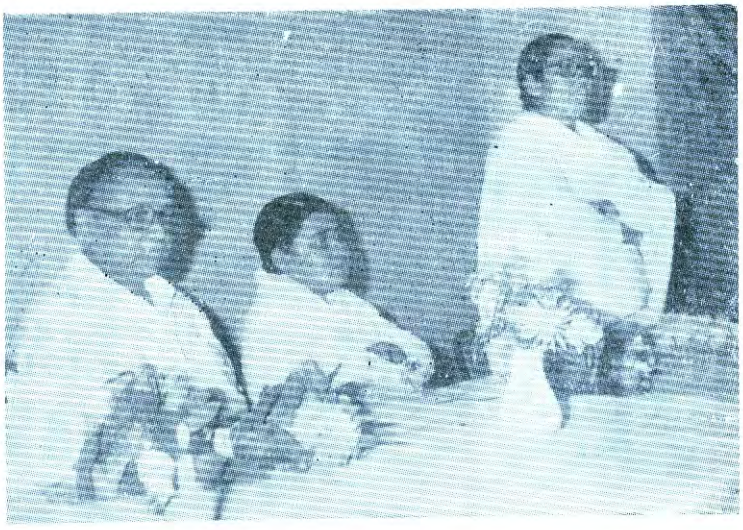

जगदलपुर में विश्व शान्ति सम्मेलन में (बाएं से) भ्राता ए० एस० शुक्ला, अतिरिक्त जिला अध्यक्ष, ब्र० कु० किरण एवं भाषण करती हुई ब्र० कु० कमला बहन।

सेकेश्वर में जूनियर कालेज में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० प्रभा।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा विकास प्रिण्टर्स, 1/7, गीता कालोनी, दिल्ली-31 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70